प्रथम अध्याय

प्रवासी हिंदी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

प्रथम अध्याय : प्रवासी हिंदी साहित्य

भूमिका:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी एक विमर्श है। जिसके संरक्षण में किया जाता है। यह 21वीं शताब्दी के पांचवें दशक के अंतिम वर्षों में स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। प्रवासी साहित्य में हिंदी के क्षेत्र में उतना ही महत्वपूर्ण था। जितना कि आज हिंदी साहित्य की विधाओं में दिखाई पड़ रहा है। जिसमें प्रत्येक लेखकों वह लेखिकाओं ने हिंदी के क्षेत्र में विदेशों में कार्य कर रहे और इसलिए आवश्यक माना गया है कि प्रवासी हिंदी साहित्य उन लोगों के लिए है। जो हिंदी को स्थापित करने के लिए कई वर्षों तक प्रत्येक छोटी-बड़ी संस्थाओं में कार्य कर रहे हैं। जहां तक की प्रत्येक बच्चें हिंदी को सीख रहे हैं। इसलिए विदेशों में 175 विश्वविद्यालयों में हिंदी में लेखन का कार्य किया जा रहा है। पुनः हमें स्मरण हो रहा है कि दो दशकों से पता चलता है कि प्रवासी हिंदी लेखकों आलोचकों एवं समीक्षकों के विभिन्न संस्थाओं में पत्र-पत्रिकाओं के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। वह पत्रिका जो प्रवासी हिंदी लेखकों को जोड़ती है। जैसे गगनांचल पत्रिका कई प्रवासी पत्रिकाओं में से एक है। क्योंकि यह पत्रिका मार्च अप्रैल 2010 के अंक में प्रकाशित हुई है। इसलिए प्रवासी लेखकों का कार्य हिंदी के क्षेत्र में व्यापक रहा है। वास्तव में प्रवासी साहित्य हिंदी की उत्कृष्ट शाखा है।

प्रवासी हिंदी साहित्य का परिचय:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवास के लिए कितना पुराना क्यों न हो? किंतु प्रवास की एक ऐसी पृष्ठभूमि जो वैचारिक होते हुए हम छोड़ते जा रहे हैं। इसलिए आज हिंदी के प्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंद की कहानी से माना जाता है। वह कहानी जो प्रवासी को केंद्र में रखकर प्रस्तुत की जाती है। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानी मेरी यह जन्मभूमि 1903 में लिखी थी। उसी कड़ी में एक और कहानी मिलती है। शूद्र जो कि विदेश में

रहने वाले गिरमिटिया मजदूरों के क्रियाकलापों पर आधारित हैं। वास्तव में गिरमिटिया मजदूरों के विदेश में जाने की आवश्यकता क्यों है? उन्हें जाने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई यह तमाम ऐसे प्रश्न है। जो प्रवासी लेखकों व लेखिकाओं के द्वारा अवगत होते हैं। इसलिए मुंशी प्रेमचंद की ऐसी नई कहानी है जो प्रवासी जगत में सामने उभरकर आती है चाहे 'उसने कहा' चंद्रधर शर्मा गुलेरी हो या मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' क्यों न हो? इन कहानियों में प्रवासी भारतीय सैनिकों का सौंदर्य था। जहां पर भारतीय सैनिकों के लिए प्रथम विश्व युद्ध के लिए लड़ना पड़ा। जहां तक की जर्मन सेनाओं के साथ लगातार युद्ध चलता रहा। इसके लिए 'गोदान '1936 को केंद्र में रखे तो सभी जगह धनिया और गोबर का परस्पर संवाद रहा है। वह मारीच देश में यथावत उल्लेख किया गया। इसलिए गोदान उपन्यास में धनिया स्वयं कहती है कि " आज साल भर बाद जाकर सुधि ली है। तुम्हारी यह देखते-देखते आंख फट गई। यही आशा बादी रहती थी कि जब वह दिन आएगा और जब देखूंगी कोई कहता था। मेरी भाग गया। कोई डबरा डाकू बताता था। सुन सुनकर जान सूख जाती थी।"1

यह स्थिति और परिस्थिति उस दौर की है। जहां पर प्रत्येक नर- नारी के साथ शारीरिक और मानसिक रूप से शोषण किया जा रहा था। ठीक इसी का प्रभाव प्रत्येक गिरमिटिया मजदूरों के साथ किया था। आप समझ सकते हैं कि जहां पर अकाल बेरोजगारी, शोषक द्वारा शोषण प्रभाव प्रवासी साहित्य में देखा गया है। जिनका कल्पना आज हम आप सभी प्रवासी लेखकों के द्वारा अवगत होते हैं। इसलिए प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों में पंडित तोताराम और बनारसीदास चतुर्वेदी ने प्रवास में रहने वाले लोगों की सामाजिक और आर्थिक रूप से दु:खो पर विचार प्रकट किए थे। यह त्रासदी उनके लिए 1913 में देखने को मिलता है। 1913 वर्ष के पहले पंडित तोताराम जी ने गिरमिटिया मजदूर मजदूरों के रूप में जब विदेश की धरती फिजी में पैर रखे और वहां पर रहकर बीते 90 वर्षों से 21 वर्ष रहे और वहां के लोगों से जिस तरह से खेतों में छोटे-बड़े कंपनियों में काम करवाया जाता था।उसी तरह उनके चरित्र और वेशभूषा के साथ अन्याय किया गया है। यह बहुत दुखद का विषय है कि जैसे ही तोताराम 21 वर्ष को व्यतीत करने के बाद जब भारत की ओर लौटते हैं। तब उन्हें उन सभी गिरमिटिया मजदूर नेता राजनेता और बुद्धिजीवियों को अपने लेखन से

सींचा। हम सभी इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि जिस भारतीय संस्कृति की वेशभूषा को विदेश में स्थापित और प्रत्येक दल के राजनेताओं उनके साथ शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया और इन्हीं सब आंखों देखा हाल जब भारत में आए तो उन्होंने अपनी पहली रचना मेरे 21 वर्ष जो कि 1915 में हिंदी जगत में आई आप समझ सकते हैं कि ऐसी रचना जिसमें किसी रचनाकार जब प्रवासी साहित्य में मिलती है। रचना को केंद्र में रखकर पढ़ते हैं। यहां तक उनकी कृति संस्मरण आत्मक शैली में लिखी गई थी ऐसे रचना को पढ़कर फिजी में रहने वाले गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा और पंडित तोताराम की संघर्ष के साथ कई यात्राओं से रूबरू होते हैं और बीते वर्षों बाद जब उनकी दूसरी गद्य रचना हिंदी जगत में विजय की पताका बज रही है रचना का नाम है। 'भूतलेन की कथा' इस रचना को पंडित तोताराम जी उन भारती गिरमिटिया मजदूर जो कुली लाइन में रहकर अपनी जीवन सरल तरीकों से जीवनयापन करते थे। हमें पुनः स्मरण हो रहा है कि दोनों रचनाएं पंडित तोताराम ने प्रत्येक मजदूरों को प्रवासी जगत दिए हैं। आज 21वीं सदी के दौर में जो रचनाएं भारत से लेकर विदेशों में चर्चा का विषय रही है।

प्रवासी साहित्य में बनारसीदास चतुर्वेदी जी प्रसिद्ध कवि है। इन्होंने भी लोगों का व्यवहार और भारत से गए गिरमिटिया मजदूरों की बड़ी बारीकी से देखा और उनके साथ कई वर्षों तक रहे हैं। जब इन सब विसंगतियों को देखते और समझते हैं तब उनसे रहा नहीं गया और पंडित तोताराम की दो रचनाएं प्रवासी जगत में आई तभी से बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने अपनी लेखन को रोका नहीं बल्कि विशाल भारत के संपादको मैं उन तमाम गिरमिटिया मजदूरों को ऐसी यात्राएं सामाजिक समस्या से लगातार जूझते रहे हैं। अंत में फिजी में रहकर लिखा। जिसका संकेत गिरमिटिया मजदूरों के लिए था। जो हिंदी जगत में एक नया स्थान बना चुकी है। इसलिए फिजी में रहने वाले साहित्यकारों ने प्रवासी भारतीय के जीवन को इन 3 रचनाओं के माध्यम से निरपेक्ष रूप से पारंगत होते हैं। तब लगता है कि यह तीन पुस्तकों में खींची में रहने वाले लोगों को समर्पित करते हैं। वह पुस्तक जोशी जी के लिए गर्व का प्रतीक है। प्रथम पुस्तक के अंतर्गत प्रवासी भारतीय व द्वितीय पुस्तक में फिजी में भारतवासी का उल्लेख बड़े स्तर पर मिलता है जैसे-जैसे गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति बढ़ती गई वैसे

ही अपनी लेखनी को आगे बढ़ाते गए। जहां तक पंडित रामचंद्र की प्रसिद्ध पुस्तक थी। पंडित अयोध्या सिंह की किसान संघ का इतिहास आदि लेखकों और रचना कृति के माध्यम से विदेशों में रहने वाले प्रवासी मजदूरों के लिए लगातार संघर्ष का विषय है आज गिरमिटिया मजदूर विदेश में न गए होते तो नए पुराने लेखकों और लेखिकाओं की लेखनी मजबूत ना होती इसलिए आज हमें नए पुराने रचनाकारों को पढ़ने व स्मरण करने की जरूरत है ।इसी को केंद्र में रखकर जब महात्मा गांधी का जिक्र होता है तो वह अपनी आत्मकथा एवं दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का इतिहास में विभिन्न प्रेरणा व अनुभवों की सीख मिलती है ।

प्रवासी हिंदी साहित्य में पंडित तोताराम और महात्मा ऐसे विद्वान वह महापुरुष थे। जिनकी रचनाओं को पढ़कर और अंदाजा लगा सकते हैं। दोनों लेखकों ने विदेशों में बहुत अच्छी तरह से भ्रमण कर चुके थे और वहां की परिस्थितियों से अवगत हुए हैं। यह प्रवासी भारतीय ऐसे लेखक हैं। जिन्होंने गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा व रहन-सहन को देखा और समझा भी है। अंततः प्रवासी भारतीयों में गिरमिटिया मजदूरों को जानना बहुत जरूरी है। अतः पंडित तोताराम और महात्मा गांधी जी ने फिजी में 21-21 वर्ष व्यतीत किए थे। इन दोनों ने भारत में आकर गिरमिटिया मजदूरों का पता लगाया और जन-जन को बताया केवल यहां तक ही नहीं बल्कि दास प्रथा को बंद करवाने का प्रयास भी किया। इसलिए हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी का सर्वोच्च स्थान रहा है। इन दोनों ने फिजी में रहने वाले लोगों की सामाजिक स्थिति आर्थिक स्थिति राजनीतिक स्थिति और सांस्कृतिक तौर पर प्रत्येक समावेश किया गया। पंडित तोताराम और महात्मा गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से भारत आते ही कुछ दिनों बाद गिरमिटिया मजदूरों को बंद करवाने का प्रयास किया लेकिन आजादी से पूर्व भारत गुलामी के कटघरों में रहा गुलाम की कट घरों में रहा और धीरे-धीरे भारत और विदेश की धरती प्रवासी भारतीयों के विभिन्न विधाओं में कहानी उपन्यास नाटक और कविता के साथ चर्चा का विषय भी बनती गई। यही कारण है कि जब महात्मा गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका भारत में आए। उस समय बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे ही परिचय हुआ तब उन्हें बहुत खुशी हुई तथा प्रवासी विभाग खोलने का प्रस्ताव भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पूर्ण रूप से समर्थन किया था। सन 1922 ईस्वी में कानपुर शहर में स्वीकार किया

गया। लेकिन प्रवासी विभाग का अलग से प्रस्ताव रखने के लिए कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष ने एक कमेटी तैयार की उस कमेटी में सिर्फ राजनेता की उपस्थिति रही। लेकिन यह सिलसिला कांग्रेस पार्टी के दलों ने तर्क वितर्क करते रहे। अंत में महात्मा गांधी जी ने पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने कहा था। यह ऐसी पार्टी है। न ही

गिरमिटिया मजदूरों के लिए करेंगे और न ही प्रवासी भारतीय को करने देंगे। अर्थात यह दोनों के बीच कशमकश की स्थिति लंबे समय तक चलती रही। इन दोनों ने अथक प्रवासी विभाग की पूरी कोशिश की लेकिन कांग्रेश पार्टी का दबदबा प्रवासी भारतीयों का निवेदन अंत में ऐसा हुआ कि कानपुर शहर में स्थापित नहीं हुआ। यहां पर प्रवासी साहित्यकारों के लिए चिंता लगातार सता रही थी। पता नहीं कब प्रवासी विभाग की स्थापना होगी। कई दिनों तक मीटिंग में कोई प्रमाण नहीं मिला। अंत में महात्मा गांधी और पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रयासों और संघर्षों से कोलकाता में प्रवासी विभाग स्थापित हुआ। अर्थात पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रस्ताव प्रवासी विभाग की नींव पड़ी और इस विभाग की स्थापना तो की गई। लेकिन कोई कार्य नहीं हुआ पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने बहुत चिंतित हुए थे। संघर्षों के इतने बीते वर्षो के प्रवासी विभाग की स्थापना भी हुई। लेकिन राष्ट्रहित के लिए असफलता का मुंह देखना पड़ा। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि एक प्रवासी भारतीय रचनाकार कितना संघर्ष का विषय है यहां कुछ करें तो अपने सुख के लिए और न करें तो दूसरों के दुख के लिए प्रवासी विभाग के लिए जो सपना उनके दिल में जग रही थी। वह आग की आड़ में बुझ गया कुछ महीनों बाद आगे चलकर बालेश्वर अग्रवाल ने पूरा करवाया यह संघर्ष निरंतर होता रहा महात्मा गांधी और पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी का।

प्रवासी हिंदी साहित्य में भारत आजाद होने पर लक्ष्मी मल सिंधवी भी जब लोकसभा के सदस्य बने थे। उसी दौरान प्रवासी भारतीय रचनाकारों को भारतवंशी कहा गया और इसलिए भारतवंशी जो भारतीय रचनाकार विदेश में जाकर हिंदी के क्षेत्र व गिरमिटिया मजदूरों की पीड़ा को अपना अंग माना है। अर्थात प्रवासी भारतीय रचनाकार और गिरमिटिया मजदूरों को अलग-अलग रखा ही नहीं है। अगर उन्हें अलग रखा भी तो ब्रिटिश शासकों व अंग्रेजों ने यह प्रभाव उस दौर का है। जिसे काले रंग और गोरे रंग को देखकर मतभेद करते हैं। यह स्थिति उस दौर के शासनकाल में निरूपित

होती थी। डॉ. लक्ष्मी मल सिंघवी ने प्रवासी भारतीयों के लिए कहते हैं कि " भारतवंशी शब्द का प्रयोग करके उन्हें भारत का अंग घोषित किया गया। लेकिन भारत सरकार की विदेशी नीति ऐसी रही कि उसमें अधिकांश हिंदू प्रवासियों के धर्म संस्कृति तथा भाषा से पूर्व भारतीयता के प्रति सरकार की कोई भी सहानुभूति और आत्मीय भाव नहीं रहा। मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक अभिमन्यु अनत ने बसंत त्रैमासिक पत्रिका के अप्रवासी विशेषांक अंक 41 वर्ष 1984 में लिखा था कि मॉरीशस के भारतीय मूल के लोग अपनी भारतीयता को कायम रखने के लिए अपनी भाषा एवं संस्कृति के साथ जोड़ते हुए मार्ग मॉरीशस यता के साथ रहते हैं"2

इसलिए जब प्रवासी भारतीय रचनाकारों को जब भारत का अंग स्वीकार किया। तब उन्हें विदेश में रहकर पूर्ण रूप से जीने की कला व अधिकार क्यों नहीं दिया गया लेकिन उस दौर में विदेश की सरकार भारत के प्रवासी भारतीय व गिरमिटिया मजदूरों को हर मामले में न करता रहा यहां तक कि अभिमन्यु अनत प्रवासी भारतीयों को यथावत रूप से जीने का अधिकार के साथ अपनी भारतीय संस्कृति को अपनाते की स्थिति में मॉरीशस में रहने की आजादी प्राप्त की। आज हम सभी इस तथ्यों से यथावत परिचित होते हैं। इस प्रकार ऐसा प्रमाण है कि 2001 में मॉरीशस की संसद ने प्रवासी भारतीय साहित्यकारों को पूर्ण रूप से हिंदी लेखन के क्षेत्र में पूर्ण रूप से काम करने का अवसर प्राप्त हुई थी और मॉरीशस में एक अधिनियम बनाकर रामायण सेंटर खोलने की अनुमति दी। इस लिए मैं समझता हूं कि प्रवासी हिंदी साहित्यकारों व गिरमिटिया मजदूरों के लिए कितना संघर्ष और उल्लास का विषय था कि प्रवासी भारतीय लेखकों ने रामायण, भगवदगीता, वेद, पुराण और महाकाव्य जैसे ग्रंथों को अलग-अलग भागों और खंडों में रखने का श्रेय प्राप्त हुआ। अर्थात रामायण सेंटर के अध्यक्ष राजेंद्र अरुण ने स्वयं कहते हैं कि " मॉरीशस बयाना फिजी सूरीनाम त्रिनिडाड और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में रामायण के द्वारा हिंदू धर्म की जय पताका फहराने वाले अनपढ़ असहाय प्रवासी भारतीय मजदूर ही थे। जो गन्ने के खेत में काम करने के लिए इन देशों में अंग्रेजी सरकार द्वारा भेजे गए थे मॉरीशस विश्व का रामायण देश माना गया है जहां प्रतिदिन घरों मंदिरों और सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं के केंद्रों में रामायण का पाठ चलता रहा है। सभी गांव नगरों में रामायण मंडलियां बनी हुई है। जो

नियमित रूप से घर-घर जाकर रामायण का सत्संग करती है।"3

जिस तरह भारतीय ग्रंथों की नींव मजबूत होती गई। ठीक वैसे ही 20 जून 2010 को त्रिनिडाड और टोबैगो की नए पद पर निर्वाचित महिला प्रधानमंत्री कमला प्रसाद बिसेसर ने अपने हाथों में गीता जैसा ग्रंथ को लेकर शपथ ली और आगे चलकर कई देशों इन सभी ग्रंथों से एक दूसरे तक पहुंचाने का काम निरंतर करते रहे। अंततः कुछ देशों के नामों में मॉरीशस फिजी सूरीनाम त्रिनिदाद आदि भारतवंशी के सांस्कृतिक धर्म के साथ ही साथ भाषिक जड़ों को मजबूती प्रदान की हैं।

भारत देश में केंद्रीय सत्ता को देखते हुए प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई ने इस पद को ग्रहण किया। उनके बाद लक्ष्मी मल्ल सिंघवी ने इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त पद को ग्रहण किया। इसलिए जून 1991 में एक पत्र में स्वयं लिखते है कि" यह हिंदी में पत्राचार और बातचीत तथा वक्तव्य का सिलसिला शुरू करने की कोशिश मैंने की है। परंतु यहां हिंदी के लिए संभावनाएं बहुत सीमित है। यदि पत्र लिखवाना चाहूं तो ना कोई लिपिक है न ही कोई तंत्र एक पुरातन जर्जर मशीन है। जिसे किसी एक पुरातन जर्जर मशीन है। जिसे किसी अजायबघर में भेजना असंगत नहीं होगा यहां अधिकांश भारतवंशी लोग या पंजाबी भाषा है या गुजराती भाषा कल रात मैंने एक भाषण हिंदी और अंग्रेजी को मिला कर दिया मुझे भाषाओं का अंधाधुंध मिश्रण अटपटा लगता है किंतु हिंदी के प्रयोग को प्रतिनिधि करने के लिए यह भी करना पड़ा। सामान्य बातचीत में हिंदी का प्रयोग अवश्य होता है अन्यथा नगय।"4

डॉ सिंघवी ने 28 जून 1992 में अटल बिहारी वाजपेई को लंदन में बुलाया और वहीं पर उन्होंने काव्य पाठ करवाया तथा अटल जी की कविता को सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए यहां तक सिंधवी जी ने लंदन में काव्य गोष्ठीओ एक संस्था में स्थापित किया। यहां इंग्लैंड प्रवासी भारतीय लेखकों और लेखिकाओं के लिए हर्ष का विषय था कि लंदन जैसी बड़ी संस्था काव्य पाठ करने का सुयोग्य अवसर प्राप्त हुआ है। उस दौर में प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के लिए गर्व का विषय था। यहां तक कि इंग्लैंड में ही हिंदी लेखकों के लिए प्रकाशित करवाने की व्यवस्था प्रदान की गई। इसी कड़ी को देखा जाए। डॉ सिंधवी न प्रवासी भारतीय रचनाकारों के लिए बहुत बड़ा काम किया तथा

समय धीरे-धीरे बदलता गया और हिंदी एक नया मोड़ लेने लगी। इसके बाद माननीय अटल बिहारी बाजपेई जी ने प्रवासी भारतीय रचनाकारों के लिए उनकी समस्या का समाधान और सुझाव के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का अध्यक्ष बनाया डॉक्टर सिंघवी जी ने अटल जी को डायस्पोरा रिपोर्ट के नाम छः पृष्ठों का रिपोर्ट सौंप दिया गया। दिनों दिन प्रवासियों की नींव मजबूत होने लगी। जब भारत सरकार को इस रिपोर्ट का पता चला। पुनः स्वीकार कर लिया गया यहां तक कि इस रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक भारतवंशी प्रवासी लेखकों और लेखिकाओं के गर्व का विषय था कि सम्मान और मिलन के दौरान ग्यारह जनवरी 2003 को पहला प्रवासी दिवस दिल्ली जैसी राजधानी में आयोजित किया गया यह प्रवासी भारतीयों का पहला अनुभव था और अनुभव सिर्फ एक दो देश शामिल नहीं बल्कि 110 देशों में रहने वाले लोगों के लिए दो करोड़ की उपस्थिति थीं। धीरे-धीरे प्रवासी भारतीयों के लिए समय बदलता गया और हिंदी अपने आप में एक नया मोड़ लेने लगी। इसलिए जहां प्रवासियों का संघर्ष वहां पर हिंदी मातृभाषा की पताका बनती गई। उसी दौरान पसंद पत्रिका जो त्रैमासिक मॉरीशस से निकली थी तथा इस पत्रिका के संपादक डॉ वीरसेन जागा सिंह ने प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अपनी संपादकीय में लिखा था कि " गिरमिटिया के वंशजों के तीन चार पीढ़ियों के बाद भी भारत माता को विस्तृत नहीं किया। उन दरिद्र परंतु स्वाभिमानी गिरमिटिया के बच्चों ने आज भी भारतीयता की ज्योति जलाए रखी है। हिंदी को हिंदी का झंडा फहराए रखा है और उनमें एक अधिकार हिंदुत्व को धर्मो रक्षति रक्षित: के अनुसार सुरक्षित रखा है।"5

प्रवासी साहित्य में जिस तरह गिरमिटिया मजदूरों ने कई पीढ़ियों से इस स्थिति को देखकर उनके बच्चे भी अपनी लोक संस्कृति वह भारतीय वेशभूषा को विदेशों में एक छाप छोड़ चुके थे और यहां तक कि हिंदुत्व का जो अधिकार है। वह लोग पालन करते हुए अपने आप को सुरक्षित रखे हैं। इसी कड़ी में अटल बिहारी बाजपेई जी इस अवसर को उजागर करते हुए कहते है कि " हमें आपका पैसा या धन नहीं चाहिए , हमें आपके अनुभव का धन चाहिए" लेकिन प्रवासी भारतीयों के लिए वाजपेई जी ने मॉरीशस के प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ का सम्मान किया और इसी सम्मान को प्रवासी भारतीयों ने संघर्ष संपूर्ण रूप से अभिवादन किया सूरीनाम एक ऐसा देश है

जहां पर 2003 में सूरीनाम में सातवां विश्व हिंदी का सम्मेलन हुआ था। उस शहर का नाम है पारा मरीबो। भारत सरकार की भूमिका को ध्यान में रखते हुए इसका मुख्य उद्देश्य है कि" भारतीय प्रदेशों में अप्रवासी हिंदी लेखकों ने जो अपनी हिंदी प्रेम कथा हिंदी निष्ठा से हिंदी में सर्जनात्मक साहित्य का छोटा सा किंतु विश्व में चारों ओर फैला हुआ है। आकाश निर्मित किया है उसे विश्व हिंदी रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाए और संसार को बताया जाए कि तूफानों आदमी और भयंकर बाधाओं एवं यात्राओं के बावजूद हमने भी हिंदी की एक छोटी सी दुनिया बनाई है यह दुनिया प्रत्येक देश की अपनी है परंतु उसकी आत्मा हिंदी की और भारतीयता की है।"6

भारत से विदेश में गए। जहां 13 देशों में जन बना चुके हैं और प्रवासी लेखकों ने कविता कहानी नाटक एकांकी निबंध डायरी पुस्तक समीक्षा बाल साहित्य और भेंटवार्ता यात्रा वृतांत व्याख्यान लोक साहित्य लघु कथा संस्मरण आदि पर निरंतर काम हो चुके हैं। इसलिए विश्व की भाषाओं में हिंदी अपने आप में बहुत ही बड़ी भाषा रही है। क्योंकि प्रवासी साहित्यकारों हिंदी के क्षेत्र में बहुत संघर्ष किए यह संघर्ष सिर्फ अपने सुख के लिए नहीं, बल्कि आज भारत से लेकर विदेशों तक हिंदी का प्रभाव रहा है। हिंदी के जाने-माने प्रसिद्ध कवि डॉ महावीर शरण जैन के अनुसार" हिंदी विश्व की तीन प्रमुख भाषाओं अंग्रेजी हिंदी और चीनी में से एक हैं।"7 ऐसे अध्यापकों ने अध्ययन और अध्यापन कार्य में जुड़े हुए हैं और विश्व के 46 देशों में प्रत्येक बच्चे हिंदी को सीख रहे हैं और हिंदी में वार्तालाप भी करते हैं पर यह दुखद है कि हिंदी के क्षेत्र हिंदी साहित्य की रचना नहीं होती थी अर्थात विश्व भर में हिंदी जैसी मातृभाषा का सर्वेक्षण करने के लिए किए गए मार्ग में विभाजित किया गया था।

(1) **गिरमिटिया मजदूरों के देशों का हिंदी साहित्य:--**

गिरमिटिया मजदूरों के लिए कई देश सामने उभर कर आए थे। जो इस प्रकार है जैसे मॉरीशस फिजी, सूरीनाम, गयाना, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिडाड और टोबैगो आदि ऐसे देश हैं। जहां पर कई मजदूरों की स्थिति लगभग ठीक थी। क्योंकि हिंदी का प्रचार प्रसार अत्यधिक मात्रा में हो चुका है।

(2) **भारत के पड़ोसी देशों का हिंदी साहित्य:-**

ऐसे देश जो भारत के कुछ नजदीकी देश हैं। जहां पर हिंदी की पृष्ठभूमि पहले की अपेक्षा आज भी दिखाई पड़ती है। जैसे नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, लंका, म्यांमार (ब्रह्मा) की गणना प्रवासी हिंदी साहित्य में निरंतर की जा रही है।

(3) **विश्व के अन्य महाद्वीपों का हिंदी साहित्य:-**

विश्व में महाद्वीपों को 5 भागों में विभाजित किया गया है। जो इस प्रकार है।

अमेरिका का महाद्वीप:- संयुक्त राष्ट्र अमेरिका कनाडा मेक्सिको क्यूबा आदि

यूरोप महाद्वीप:- रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड, नीदरलैंड, नॉर्वे, डेनमार्क, ऑस्ट्रेलिया स्वीटजरलैंड, स्वीडन, फिनलैंड, इटली, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी रोमानिया, अलमारियां, यूक्रेन, क्रोएशिया आदि छोटे-छोटे देशों में हिंदी का प्रभाव रहा है।

मध्य एशिया के देशों का हिंदी साहित्य:- मध्य एशिया में ऐसे अधिकांश देश हैं। जहां कई देशों के समूह हैं। जो इस प्रकार प्रस्तुत है। जैसे मुस्लिम देशों में इराक, ईरान, आबू धाबी, तुर्की आदि।

एशिया महाद्वीप:- एशिया महाद्वीप में चीन जापान कोरिया और थाईलैंड हैं।

ऑस्ट्रेलिया:- यहाँ एकमात्र देश है। ऑस्ट्रेलिया।

प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा:-

भूमिका:-

प्रवासी साहित्य आज समकालीन हिंदी साहित्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बना चुका है। इसलिए इसे नवयुग का विमर्श कहा जाता है। क्योंकि इस युग में प्रवासी साहित्यकारों की हिंदी विश्व भर में फैला हुआ है और प्रवास के कारण प्रत्येक व्यक्ति

अपने शहर व गांव से अलग होने का दर्द अलगाव बिखराव के साथ ही साथ अकेलेपन का एहसास कर रहे हैं तथा विदेशों में रह रहे नस्लें संस्कृति धर्म भाषा को स्थापित न करते हुए संघर्ष करते हैं। जय प्रवासियों का अवधारणा हमें विस्थापन से तो दूर नहीं ले जाती। बल्कि हमें हिंदी के क्षेत्र में अपनत्व का रास्ता विदेश की धरती को जरूर छू जाती है। यह अवधारणा कई दशकों से विदेशों में देखने को मिलती है और हिंदी को नए-नए हाशिए को केंद्र में रखकर निर्मित रूप से काम कर रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रवास क्या है? प्रवास की उत्पत्ति कहां से हुई है? प्रवास एवं प्रवासी साहित्य में क्या योगदान रहा है। इसके लिए कई आलोचकों विद्वानों और समीक्षकों ने हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य को सम्मिलित किया गया है। यहां पर सबसे बड़ी बात यह है कि प्रवास और प्रवासी को समझना बहुत जरूरी है।

प्रवास का मूल अर्थ:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवास का मूल शब्द उस शब्द से है। जो अंग्रेजी शब्द में प्रयोग किए जाने वाला शब्द डायस्पोरा।जो कि प्रवास के लिए मूल शब्द है। इस मूल शब्द को ग्रीक शब्द के नाम से जानते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रचार प्रसार अथवा प्रकीर्णन है। प्रवास को केंद्र में रखकर डायस्पोरा विच्छेद करने पर दो शब्द सामने उभर कर आता है। प्रथम शब्द यह है कि डाय को क्षेत्र में और दूसरे शब्द में इस स्पियरों को बोना अर्थात डायस्पोरा शब्द को मिलाने पर प्रतीकात्मक शब्दों में बीजों से संबंधित है। प्रवासी हिंदी साहित्य में जब डायस्पोरा की बात आती है। पता चलता है कि इस शब्द का प्रयोग कौन किया था? यह भी अपने आप में एक मुद्दा है। एक चुनौती है। जिसे जानना बेहद जरूरी है। कुछ सूत्रों के मुताबिक जानकारी प्राप्त होती है कि डायस्पोरा शब्द का प्रयोग ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदी के परिपेक्ष में मिलता है। जब इन सब पहलुओं से अवगत होते हैं। वहां की सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था तथा अन्य किसी कारणों की वजह से उन्हें अपनी जन्मभूमि को छोड़ना पड़ा और विदेश में जाकर बस गए हैं। जिसका कोई मोड़ और तोड़ नहीं है। जिस समय यहूदियों ने अपनी संस्कृति और सभ्यता को बरकरार रखने के लिए जब दूसरे देश में गए तो उन्होंने आम तौर पर डायस्पोरा शब्द का द्योतक रहा है। यही कारण है कि हर एक पैमाने पर अपनी पहचान रखते हैं। विलियम डायस्पोरा शब्द को निम्नलिखित

विशेषताएं बताते हैं जो इस प्रकार है।

* मूल देशों से बाहर

* सामूहिक स्मृति का बने रहना

* मूल शब्द का दर्शन अथवा पौराणिक कथा।

* पोसी समाज में आंशिक (कभी भी पूर्ण नही) समांगीकरण।

* मूल देश में वापस लौटने की आदर्श इच्छा।

* देश के पुनरुद्धार की वांछनीय प्रतिबद्धता और मूल देश से संबंधों को जानने का सतत प्रयास।

इस प्रकार देखते हैं कि डायस्पोरा शब्द इंग्लिश शब्दकोश में गैर यहूदी राष्ट्रों में यहूदियों के प्रसार के रूप में बाइबिल में वर्णित है।

डॉ कृष्ण कुमार के अनुसार:-

"हिंदी भाषा में प्रायः व्यवहारिक रूप से एवं शब्दकोश के अनुसार भी देशों में रहने वाले को प्रवासी की संज्ञा दी जाती है। व्यवहारिक रूप से अन्य भाषाओं में रहने वालों को प्रवासी की संज्ञा दी जाती है। व्यवहारिक रूप से अन्य भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग भिन्न है। बंगाली भाषा में इस शब्द का व्यापक प्रयोग जिसके अंतर्गत घर पर न रहने वाले को प्रवासी कहते हैं। निस्संदेह है इसके अंतर्गत विदेश में रहने वाला भी सम्मिलित है। प्रवास शब्द वसुधा तू में प्र उपसर्ग लगने से बनता है। वह धातु का प्रयोग रहने के संदर्भ में किया जाता है। प्र उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ बदल जाता है।"8 डॉक्टर पद्मेश गुप्त ने अपनी कविता संग्रह प्रवासी पुत्र के माध्यम से कहते हैं कि

प्रवासी पुत्र अखबार वालों का

बिल नहीं चुकाता

यात्रा के लिए ट्रेन या बस की

बुकिंग नहीं करवाता

रात विरात पिता केखांसने पर

उन्हें पानी नहीं पिलाता

या फिर दौड़कर

नुक्कड़ से दवा की दो गोलियां

नहीं लाता........

मैं तो अपनी भाषाओं के अक्षरों में

अपनी मात्राएं स्वयं खोजता है

एक बार फिर चलता है

घुटनों के बल

नए संघर्षों से जूझता हुआ-सा'

नया कल ढूंढता।"9

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रवासी भारतीयों के लिए एक नया संघर्ष ह्रदय स्पर्शी है। कहीं न कहीं इस संग्रह में प्रवासी पुत्र में व्यवस्था विवशता झलकती है और अपने घर परिवार वालों बच्चों का थोड़ा भी ध्यान देते है। आज इस मिट्टी को अपनेपन में देरी नहीं लगती। इसलिए प्रवासियों का दर्द और संघर्ष उनके कविताओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रवासी अर्थ एवं परिभाषा:-

सर्वविदित है कि प्रवास एक ऐसा शब्द है। जिस को परिभाषित करने के लिए हमें प्रवास को समझना होगा। तभी प्रवास को समझ पाएंगे। क्योंकि प्रवास एक समाज

शास्त्रीय अध्ययन है। जिसे जानकर विभिन्न प्रवास और प्रवासियों को समझते हैं। प्रवास के लिए लेखकों दूरियां भी महसूस होती है और नज़दीकियां भी इसलिए उन्हें एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान तक चले जाना ही प्रवासी माना जाता है। जहां पर हम देखेंगे कि जिस तरह प्रवासी भारतीय रचनाकारों ने प्रवास को जोड़ा है और उन्हें किन किन साधनों से गुजरना पड़ता है हम समझते हैं कि यह घटनाएं प्रवासी रचनाकार के खुद परिभाषा को तय करना होता है। तभी हम सभी प्रवासी को समझ पाएंगे अतः प्रवास के लिए एक समय सीमा और विशेष स्थान की आवश्यकता होती है। तभी वे प्रवासी भारतीय रचनाकार तय कर पाएंगे।

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवास शब्द' वस' धातु में प्रयोग स्वर्ग लगाने से बनता है। इस तरह के शब्द को मातृभूमि से अलग होते हुए भी विदेश में बस जाते हैं। यही अपनत्व को प्रवासी शब्द को परिभाषा को जोड़ पाएंगे। इसके लिए कई आलोचकों विद्वानों और समीक्षकों ने प्रवास को जोड़ा है तथा प्रवास को संधि विच्छेद करने पर प्र+वासी वासी है। जब इसे अलग करते हैं। तो प्र का अर्थ उत्कृष्ट प्रीति और वासी का अर्थ निवासी होता है। अर्थात वासी हिंदी साहित्य का मूल उत्कृष्ट रूप से निवास करने वाला साधारण व्यक्ति होता है। अन्यत्र भारत भूमि को छोड़कर किसी अन्य विदेशों में रहकर जीवन यापन करते हैं। जिसे प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है और आज प्रवासी हिंदी साहित्य एवं रचनात्मक दिवस है। जितना कि कमलेश्वर के साहित्य पर प्रवासी को परिभाषित करने के लिए निन्म साहित्यकार परिलक्षित होते हैं। जैसे कृष्ण कुमार पंजाबी लेखक डॉ स्वर्ण चंदन डॉ वेदप्रकाश बटुक और डॉक्टर करनैल सिंह आदि।

लोकभारती प्रमाणिक हिंदी कोश प्रवासी का अर्थ:- "परदेश में जाकर बसने या रहने वाला।"10

कृष्ण कुमार लिखते हैं कि "धनार्जन के लिए अपने घर से विस्थापित भौतिक सुख चैन अन्वेषक को प्रवासी कहते हैं।"11

पंजाबी साहित्यकार डॉ करनैल सिंह ने कहा है कि "प्रवासी शब्द प्र और वासी दो शब्दों को दो शब्दों का जोड़ है। पर यह अभिप्राय दूसरा और पराया है। वासी किसी

स्थान के निवासी को कहा जाता है। इस प्रकार प्रवासी सत्य किसी स्थान पर जाकर बसने वाले व्यक्ति को कहा जा सकता है।"12

डॉ वेद प्रकाश बटुक के अनुसार" प्रवासी अंग्रेजी शब्द एनिग्रेट का पर्याय है। वह लोग जो अपना देश छोड़कर अन्य देशों में जाकर बसे हैं। "13

पंजाबी लेखक डॉ सवर्ण चंदन के अनुसार:- "प्रवासी की वापसी निश्चित होती है। वह उपलब्धियां प्राप्त करके वापस जाने का फैसला कर सकता है और नहीं भी कर सकता है।"14

हिंदी शब्द सागर में प्रवासी का अर्थ "विदेश में निवास करने, वाला परदेश में रहने वाला। "15

लोक भारतीय प्रमाणिक हिंदी में प्रवासी शब्द का अर्थ:-

परदेश में जाकर बसने या रहने वाला।"16

कृष्ण कुमार लिखते हैं कि "धनार्जन के लिए अपने घर में विस्थापित भौतिक सुख चैन के अन्वेषक।"17

संस्कृत कोश के अनुसार" विदेश में गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, परदेश निवास।"18

हिंदी शब्द सागर में प्रवास का अर्थ:-अपना घर या देश छोड़कर किसी दूसरे देश में रहना, विदेश में रहना, परदेश का निवास विदेश है।"19

संस्कृत कोश के अनुसार:- प्रवासी किंवा, प्रवासी का अर्थ (प्र+वस+ णनि) अर्थात विदेशों में रहने वाला साहित्यकार।"20

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक लेखक एवं लेखिकाओं ने जिस तरह से प्रवासी की परिभाषा को समायोजित किया हैं। उसी प्रकार हिंदी विदेशों में पढ़ा रहे है। यही कारण है कि इन सभी परिभाषा को समाज परिवार और देश के हित के

लिए किया जाता है। जिससे प्रवासियों का दर्द अपना है और बेगाना भी है। क्योंकि यह परिभाषा सिर्फ प्रवासी रचनाकारों के लिए नहीं, बल्कि हम सभी के लिए गौरव और आत्म सम्मान की बात है जिसे नवयुग के विमर्श के नाम से संबोधित किया जाता है

प्रवासी हिंदी साहित्य का नामकरण:-

प्रवासी साहित्य का अर्थ :-

हिंदी शब्द ' प्रवासन' की तुलना में डायस्पोरा' शब्द प्राचीन है यह शब्द मूलतः ग्रीक भाषा का है। सायस्पोरा या Diaspora को ग्रीक भाषा के Diaspora शब्द से लिया गया है। संधि-विच्छेद करने पर यह शब्द इस प्रकार है : Dia और sperien जिसका अर्थ "बीजों को बोना, छितराना या बिखेरना, फैलाना" 1आदि है।

मूलतः इस शब्द का प्रयोग ई. पू. ५६६ में यहूदियों के बेबीलोनिया से निष्कासन के संदर्भ में किया गया था। आधुनिक काल में यह शब्द यहूदी निष्कासन प्रवासन और विस्थापन तक ही सीमित नहीं रहा है। आज इस शब्द का प्रयोग विभिन्न देशों के मानव समूहों के विस्थापन, प्रवासन और पुनर्वसन के संसार को रेखांकित करने के लिए किया जाता है।

कई भारतीय ऐसे हैं जो भारत से इतर देशों में हिंदी रचना व विकास के काम में लगे हुए हैं। इनमें दूतावास के अधिकारी और विदेशी विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तो है ही, अनके सामान्य जन भी हैं जो नियमित लेखन व अध्यापन से विदेश में हिदी को लोकप्रिय बनाने के काम में लगे हैं।

प्रवासी साहित्य की मान्यता :-

भारत के प्रवासी साहित्य प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा में दो प्रकार के प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां मिलती हैं-

१. गिरमिटिया मजदूरों के देश का हिंदी साहित्य । २. विश्व के विकसित देशों में रचा हिंदी साहित्य ।

इनमें पहले प्रकार का हिंदी साहित्य उन गिरमिटिया मजदूरों की देन है जो छल-कपट से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में शर्तबंदी मजदूरों के रूप में खेतों में काम करने के लिए

मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद आदि देशों में भेजे गए थे।

विश्व के अन्य महाद्वीपों - अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, एशिया तथा ऑस्ट्रेलिया आदि में प्रायः हिंदी भाषा शिक्षण एवं साहित्य अध्ययन की व्यवस्था है, परंतु अमेरिका, कनाडा तथा इंग्लैण्ड (ब्रिटेन) में ही प्रमुख रूप से भातरवंशियों ने हिंदी में साहित्य रचना की है।

दुनिया के डेढ़ सौ से अधिक देशों में भारतीय प्रवासियों की आबादी करीब ढाई करोड़ मानी जाती है। प्रतिशत की दृष्टि से मॉरीशस में सबसे अधिक है, इसके बाद गुयाना, फिजी, त्रिनिदाद तथा टोबैगो, सूरीनाम जैसे देशों का स्थान हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य के अवलोकन सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया कुछ वर्ष पहले ही शुरु हुई है; इसे एकत्रित करने, अध्ययन एवं विश्लेषण में डॉ. कमल किशोर गोयनका का विशेष योगदान रहा है।

विश्व हिंदी सम्मेलनों के कारण हिंदी के प्रवासी लेखकों से संपर्क बना है और उनके साहित्य पर छुटपुट चर्चाएं हुई हैं; भूमंडलीकरण, डायस्पोरा तथा प्रवासी साहित्य सम्मेलनों ने हिंदी के प्रवासी साहित्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न किया है, भारतेतर देशों में प्रवासी लेखकों तथा हिंदी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हिंदी की पत्रिकाओं ने हिंदी समाज को अपनी उपस्थिति से जागरित किया है।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं अक्षरम ने मिलकर हिंदी के प्रवासी साहित्य पर संगोष्ठियां की हैं, साहित्य अकादमी ने प्रवासी हिंदी साहित्य पर पुस्तकें प्रकाशित करना आरंभ किया है तथा 'प्रवासी संसार', 'अक्षरम' आदि पत्रिकाएँ पूर्णतः हिंदी के प्रवासी साहित्य के लिए समर्पित है। सूरीनाम में हुए सातवें विश्व हिन्दी सम्मलेन के अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली ने भारतवंशी प्रवासी हिंदी लेखकों का एक प्रतिनिधि संकलन 'विश्व हिंदी रचना' शीर्षक से प्रकाशित किया, जिससे विश्व में चारों ओर फैली प्रवासी साहित्य की एक दुनिया सामने आयी । इस दुनिया में प्रत्येक देश की अपनी-अपनी छोटी सी दुनिया थी, किंतु विश्व के हिंदी मंच पर प्रतिष्ठित थी और उसकी आत्मा हिंदी और भारतीयता की थी।

सामान्य रूप से प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य 'प्रवासी साहित्य ' होता है | यहाँ पर प्रश्न होता है कि 'प्रवासी साहित्य ' किस साहित्य को कहा जाए ? कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर अपना मंतव्य बताते हुए कहा था कि-" रचना अपने मानदंड खुद

तय करती है ,इसलिए इनके मानदंड बनाये जाएँगे | उन रचनाओं के मानदंड तय होंगे | " 2

हिन्दी साहित्य भारत के अलावा मॉरीशस ,अमरीका जैसे देशों में अपना पाँव पसारे हुए है | ऐसा कहने के पीछे का कारण यह है कि भारत के मूल निवासी हिन्दी लेखकों को वहाँ जाकर राष्ट्रभाषा में हिन्दी में अलग-अलग प्रकार की कृतियों का सृजन किया | इस तरह के साहित्य को 'प्रवासी साहित्य 'और ऐसे साहित्यकारों को 'प्रवासी साहित्यकार' के रूप में पहचाना जाता है | इसके पीछे का कारण यह था कि कोई अपने शौक के लिए गए तो कोई रचनाकार लाचारी में वहाँ गए | किन्तु वे अपनी भारतीय परंपरा एवं भाषा प्रियता को छोड़ नहीं सके | भारत से अलग हो जाने के बाद विदेशों में स्थित होकर अपने घनिष्ठ प्रयत्नों से प्रवासी साहित्य की सृजना की है | उन्हें वहाँ जाने के बाद जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा उसे प्रवासी साहित्य के द्वारा स्वयं की वेदना ,दु:ख -दर्द को कलम के द्वारा लोगों तक पहुँचाने का कार्य किया | तो साहित्यकार उस स्थान पर अपनी मर्जी से घूमने गए तो वहाँ जाकर उन्होंने भी 'प्रवासी साहित्य ' की रचना की |

"हिन्दी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक रचा, जो चाहे छोटा ही था. परंतु उसने एक अलग साहित्य-संसार की रचना की जो पूरे विश्व में निरन्तर फैलता गया और हिन्दी के प्रवासी साहित्य का एक बिम्ब निर्मित हुआ। वह अब मॉरीशस तक सीमित न था, उसका परिदृश्य वैश्विक बन गया। उसकी संरचना में कई शक्तियाँ काम करती रहीं- विश्व के कई देशों में हिन्दी संमेलन हुए, भारत में हिन्दी लेखकों एवं प्रवासी के हिन्दी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा, देशों की साहित्य अकादमियों ने प्रवासी हिन्दी साहित्य पर गोष्ठियाँ की, 'प्रवासी भारतीय दिवस' तथा 'डायस्पोरा' आरंभ किया गया। प्रवासी भारत की कृतियों भारत में छपती रहीं और उन पर चर्चाएँ हुई। हिन्दी विश्व में प्रवासी हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठा तथा उसे हिन्दी की मुख्यधारा में उचित स्थान देने की माँगें उठने लगीं और हिन्दी साहित्य ने इस ओर प्रयत्न शुरू किए। " 3

वर्षों पहले से ही भारत के लोग विदेशों की यात्रा करते आये हैं। दुनिया के सभी देशों में कहीं न कहीं कोने में भारतीय बसा हुआ है। पहले विदेश जाना थोड़ा कठिन था, लेकिन अब सरल प्रक्रिया हो गई है। विदेश में रहनेवाले अनेक साहित्यकारों ने साहित्य

की रचना की। वहाँ की भाषा में इतनी सहानुभूति, प्रेम नहीं मिलता। लेकिन उन्होंने अपनी भारतीय भाषाओं में हिन्दी जो कि राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है। उसी भाषा में अपने विचारों, कल्पना जगत को उजागर करने का अथक परिश्रम इन लेखकों ने किया है।

प्रवासी लेखक भले ही विदेशों में रहते हों, लेकिन उनका आत्मीय संबंध अपने देश से ही होता है। विदेशों में बैठे-बैठे भारतीय को भी वहाँ की संस्कृति, सभ्यता का परिचय करवाते हैं। अपने देश की कला, संस्कृति, सभ्यता को दूसरे के साथ जोड़कर कुछ घटाने और बढ़ाने की बात करते हैं। साप्रंत समय में प्रवासी लेखकों को यह काम सौंपा जाने लगा है कि दो संस्कृति के मेलजोल या मिलाप करने का प्रयत्न करें।

"वह लेखक संस्कृतियों को निकट लाकर समन्वयवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दे सकता है। आर्थिक जगत में वैश्वीकरण की धारणा जिस प्रकार फलीभूत हो रही है। और विश्व गाँव का स्वप्न देखा जा रहा है तथा सूचना क्रांति इस स्वप्न को साकार करती दिखाई पड़ रही है, उसी प्रकार से साहित्य का सर्वोत्कृष्ट गुण रहा है। आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व भक्तिकाल के शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने वर्ग-वर्ग में बैठें समाज, संप्रदायों और विचारधाराओं का समन्वय करने का युग-परिवर्तनकारी कार्य किया था। अपनी इस विशिष्टता के कारण ही रामचरितमानस एक सर्वकालिक और सार्वजनिक ग्रंथ बन गया है। आधुनिक युग में महान घुमक्कड़ और विराट व्यक्तित्व के धनी राहुल सांकृत्यायन ने देश-विदेश के अगम्य क्षेत्रों का न केवल अन्वेषण किया, अपितु गंगा और वोल्गा नदियों पर अपनी दार्शनिक दृष्टि से समन्वयकारी विचारधारा को संतुष्ट किया है। आज प्रवासी हिन्दी साहित्य से जुड़ी सबसे बडी अपेक्षा समन्वय की है।" 4

वर्तमान समय में तो ऐसे प्रवासी साहित्य की रचना होती है जिसमें देश से जुड़ी सहानुभूति दिखाई देती है। प्रवासी साहित्य में परिवर्तन की गई स्थितियों के आधार पर मनुष्य जीवन की परिवर्तनीयता का स्वरूप देखने को मिलता है। जिसमें ऐसे देशों से जुड़े हुए प्रवासी साहित्यकार रहे हैं उसमें ज्यादातर कनाड़ा, इंग्लैण्ड, मॉरीशस के अलावा जर्मनी, आस्ट्रेलिया, अमेरिका नीदरलैण्ड आदि हैं।

जितना लगाव अपनी मातृभूमि से होता है। उतना दूसरी जगह से नहीं होता। तब तो यह एक लेखक या साहित्यकार की बात है। वे भला अपने देश से जुड़ी सहानुभूति को लिपिबद्ध किए बगैर कैसे रह सकते हैं? के कुछ लेखक पैसा कमाने के लिए या

फिर अध्ययन हेतु वहाँ गए थे |

"अमरीका ,इंग्लैण्ड आदि देशों के भारतवंशी हिन्दी लेखक स्वयं को भारतीय लेखक मानते हैं और अपनी हिन्दी रचनाओं में देशी पहचान और भारतीय संस्कृति को मजबूत आधार देते हैं |" 5

प्रवासी लोगों की तीन प्रकार की श्रेणियाँ बनाई जा सकती है | 1.इस श्रेणी में गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फिजी , मॉरीशस ,त्रिनिडाड ,गुयाना ,दक्षिण अफ्रीका इत्यादि देशों में भेजे गए थे | 2.इस श्रेणी में अस्सी के दशक में खाड़ी देशों में गए अशिक्षित , अर्धकुशल मजदूर आते हैं | 3.इस श्रेणी में अस्सी नब्बे के दशक में गये सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं जिन्होंने उत्तम भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया | इन तीनों ही श्रेणियों में सांस्कृतिक ,सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का अंकन होता है | खान-पान ,पोशाक , बोली ,भाषा ,पर्व-त्यौहार का भी उल्लेख होता है | प्रवासी साहित्य में कहानी ,कविता ,उपन्यास ,गजल आदि विधाओं में मुख्य रूप से लिखा गया |

प्रवासी साहित्य की परंपरा बहुत पुरानी है, लेकिन फिर भी प्रवासी साहित्य अपनी संवेदनशील रचनाधर्मिता के कारण साहित्य में अपनी गहरी जड़े जमा चुका है | भारत से दूर कहीं दूसरे क्षेत्रों में बसे भारतीयों के असंख्य प्रयत्नों से आज प्रवासी साहित्य समृद्ध एवं सशक्त बन पाया है | इस प्रकार यहाँ प्रवासी साहित्य का नामकरण इस तरह प्रस्तुत किया गया है |

स्वरूप:-

प्रवासी हिंदी साहित्य को स्वरूप की दृष्टि से देखा जाए तो इसमें कई प्रवासी भारतीय रचनाकारों के नाम मिलते हैं। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि स्वरूप किन-किन पैमाने से माना जाता है और किन प्रतिबिम्बों समायोजन करता है। इसे देखना बेहद आवश्यक है तथा इतना ही नहीं बल्कि अनुशीलन के आधार पर विवेचन के परिणाम स्वरूप उद्घाटित किया जाता है और भारतीय मूल के लोगों ने ही विश्व भर का कारण बताकर पहले हुए हैं तथा विदेश में रहकर भी अपनी जन्मभूमि बना लिया हैं। इस प्रकार पिछले कई वर्षों से देखा जाए तो विभिन्न प्रवासी साहित्यकारों ने अपने विचारों

का आदान प्रदान कर रहे हैं किंतु जो लोग प्रवासी साहित्यकार से बिल्कुल परिचित नहीं है उन्हें प्रवासी लेखकों को भी लेखकों को पढ़ना बेहद जरूरी है तभी हम सभी प्रवासी साहित्य के स्वरूप को समझ पाएंगे तथा इसी स्वरूप को देखते हुए भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की चित्र की जाती है चाहे वह किसी विशेषांक हो या कोई पत्रिका क्यों ना हो अर्थात प्रवासी पत्रिका का नाम निम्न भागों में परिलक्षित होता है। जैसे बसंत पत्रिका, रिमझिम पत्रिका, पुरवाई पत्रिका और आदिवासी पत्रिकाओं के नाम मिलते है। जो प्रवासी साहित्य के स्वरूप में अपना स्थान बना चुकी है। इसलिए प्रवासी साहित्यकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है जो इस प्रकार है।

(1) वे भारतीय नागरिक जो अध्ययन और अध्यापन के लिए विदेश में गए और वहां जाकर हिंदी के कार्य को लेकर साहित्य की रचना की। उनके द्वारा रचित साहित्य को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है।

(2) वे भारतीय जो अपने देश से बाहर रह कर रोजगार व उच्च शिक्षा व जीवन स्तर की प्राप्ति वस्वेच्छा से विदेश गए और वहां रहकर हिंदी साहित्य के अंतर्गत लेखन का कार्य किया

(3) वे ऐसे व्यक्ति जो अपनी मातृभूमि में ही अपने देश व जनपद के अंतर्गत भाषा एवं बोली की परिपाटी को अलग करके जब किसी दूसरे प्रांत जनपद भाषा एवं बोली के क्षेत्र में प्रवास करने के बाद प्रवासी हिंदी साहित्य का निर्वाचन करने लगे।

(4) वे प्रवासी भारतीय जो दूतावासों में रहकर हिंदी साहित्य की सेवा करने के लिए विभिन्न साहित्यकारों प्रवासी साहित्य के अंतर्गत समायोजन किया जा रहा है।

अर्थात प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी का स्वरूप उदाहरण के परिपेक्ष में देखा जाए तो प्रत्येक प्रवासी भारतीय साहित्यकारों एवं भारतीय लेखकों द्वारा हिंदी शिक्षण का कार्य करने के लिए विचारों का आदान प्रदान करना व अध्ययन एवं अध्यापन के कार्य प्रभावशाली बनाना आदि का समायोजन किया जाता है इसके साथ ही साथ पर्यटन व रोजगार की तलाश करना आदि रूपों आदि रूपों में प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का योगदान रहा है। यहां तक कि उच्च शिक्षा में काम करने के लिए शिक्षा

को मजबूत बनाना होगा। तभी विदेश में रोजगार को पा सकेंगे। मैं बताना चाहूँगा कि सब ऐसे ही विदेश में जाकर बस नहीं जाते, वह वहां पर बहुत संघर्ष करते हैं। इसी संघर्ष के साथ विदेश के महिलाएं और पुरुषों ने हिंदी के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहे हैं और हिंदी में वाचन भी कर रहे हैं। इस प्रकार यह स्वरूप प्रवासी हिंदी साहित्य एक विशेष अलग अंग है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य की न्यू विदेश एवं स्वदेश एवं विदेश प्रेम की बुनियादी क्रियाकलापों में टिकी है। इसलिए विदेशों में कई विधाओं का प्रचलन हो चुका है। चाहे वह किसी भी प्रवासी भारतीय रचनाकार एवं रचनाओं एवं लेखिकाओं का कोई भी विधा क्यों न हो? अर्थात सभी विधाओं पर काम किया जाए तो सभी विधाओं पर काम किया जा रहा है। हम सभी को प्रवासी हिंदी साहित्यकारों पर गर्व होनी चाहिए कि उनकी पीड़ा दुख दर्द और विभिन्न प्रकार की यातनाएं आदि बिंदुओं पर झेलनी पड़ती है। जैसे कविता उपन्यास यात्रा वर्णन कहानी आत्मकथा आदि का सृजन किया गया है। आज विदेशों में एक से अधिक काव्य गोष्ठियों का आयोजन, राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार किया जा रहा है। अभी हाल में अभी हाल में भी गिरा हुआ हिंदी विश्व सम्मेलन मारीशस में हुआ था। आपको बता दें कि हिंदी प्रवासी कथा साहित्य नामक प्रवासी भारतीय पुस्तक प्रो. कल्पना गवली के संपादिका में आई थी। यहां तक कि मॉरीशस में विवेचन किया गया।

डॉक्टर भगवान दास काहार के अनुसार:-

"प्रवासी हिंदी कथा साहित्य के विविध आयाम शीर्षक के संदर्भ में दिनांक 12 फरवरी 2018 के शुभ अवसर पर होटल जल सागर सयाजीगंज पीपीसी टावर के सामने बड़ौदा में एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा द्वारा किया गया। संगोष्ठी का कुशल संचालन संगोष्ठी की संयोजिका प्रोफ़ेसर डॉ कल्पना गवली द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुझे भी सहभागी होने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।"21

इसी कड़ी में जब आगे चलते हैं तो प्रवासी हिंदी साहित्य अत्यंत संपन्न है क्योंकि विदेशों में उनका एक अलग पहचान है तथा नए-नए साहित्यिक विधाओं को सृजन कर रहे हैं अर्थात आगे चलकर प्रवासी साहित्य परिदृश्य न होकर बल्कि वैश्विक परिदृश्य

परिपेक्ष में मिलती है यही कारण है कि साहित्य अकादमी ने प्रवासियों पर संगोष्ठी कराई और धीरे-धीरे विश्व भर फैलने लगे। इस प्रकार 10 जनवरी 2003 से ही प्रवासी दिवस दिल्ली जैसी राजधानी में मनाया गया और प्रवासियों की जमीनी स्तर मजबूत होती गई। हाल ही में भारत सरकार ने प्रवासी दिवस को हर वर्ष प्रथम माह 9 जनवरी को मनाए जाने लगा और प्रवासी दिवस इसलिए मनाया जाने लगा कि उसे बीते दौर में महात्मा गांधी जी सन 915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटे थे। इसलिए भारत में प्रवासी दिवस बनाए जाने लगा यहां तक प्रवासी भारतीय साहित्यकारों को आज भी गर्व है हर प्रत्येक वर्ष प्रवासी दिवस मनाया जाने लगा। बाल गंगाधर तिलक जी कहते हैं कि "देश की अखंडता आजादी के लिए हिंदी पुल है।"22

यह तथ्य बिल्कुल सही है कि राष्ट्रभाषा प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों अपने देश की भाषा संस्कार और लोक संस्कृति को सच किया है। इसलिए पूरे विश्व में प्रवासी साहित्यकारों की गूंज देखने को मिलती है। इस संदर्भ में मौलिकता और नवीनता के विभिन्न विधाओं को मजबूती मिली है। महात्मा गांधी जी ने विश्वग्राम को सपना देखते हुए कहा था कि " मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से गिरा रहे न मैंने खिड़कियों को कसकर बंद रखना चाहता हूं मैं तो सभी देशों की संस्कृति कहा अपने घर पर बेरोक टोक संचार चाहता है।"23

महात्मा गांधी जी उस स्थिति को देखे हुए थे कि जहां पर आपसी सहयोग और संबंध के सहारे वर्तमान की स्थिति रही है। विदेशों में अमेरिका, इंग्लैंड, मॉरीशस में सर्वाधिक संख्या है।

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का हिंदी में योगदान:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का हिंदी में योगदान नींद परिलक्षित होते हैं क्योंकि यह योगदान दो क्षेत्रों में विभाजित की जाती है एक तो वह वर्ग है जो गिरमिटिया मजदूरों के लिए और दूसरा वर्ग वह है। जो पूँजीवादी व्यापार एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए किया जाता है।

(1)प्रवासी साहित्यकारों की सक्रियता से विदेशों में अनेक विश्व हिंदी सम्मेलनों का

आयोजन सफलतापूर्वक है और भविष्य में भी इस तरह के सम्मेलन होते रहेंगे।

(2) विश्व हिंदी सम्मेलनों में प्रवासी साहित्यकारों के विचारों से हिंदी को अधिक बल मिला। इससे विश्व ने भी हिंदी की महत्ता को समझा और माना है। अब विश्व स्तर हिंदी की संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा स्वीकृत करने के लिए स्वीकृत कराने के लिए अधिक तेजी से प्रयास हो रहे हैं।

(3) प्रवासी हिंदी विशेषज्ञ शिक्षकों और उद्योगपतियों के कार्यों से हिंदी का वैश्वीकरण अधिक तेज होने लगा है एवं हिंदी के लिए एक सुखद अनुभूति है।

(4) प्रवासी हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं का गहरा प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा है। इसे अब भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी का विरोध कम है।

(5) विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में हिंदी का पठन-पाठन बढ़ा है। इस हिंदी में पठन-पाठन का श्रेय इन प्रवासी साहित्यकारों का है। अब वह दिन दूर नहीं है। जब हिंदी विश्व की प्रथम भाषा होगी। यह कार्य प्रवासी साहित्यकारों द्वारा ही शीघ्र संपन्न होगा।

प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास:-

प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास बीसवीं शताब्दी के पांचवें दशक के अंतिम वर्षों में मानी जाती है। जिस समय भारत आजाद हुआ था। उस समय प्रवासियों की उतनी चर्चा नहीं थी। जितना कि आज प्रवासी हिंदी साहित्यकार सामने उभर आते हैं। इसलिए दो दशकों से पता चलता है कि ऐसे आलोचकों समीक्षकों और प्रवासी साहित्यकारों ने कई छोटे-बड़े संस्थाओं में काम करने लगे। इसलिए अधिकांश प्रवासी कवियों ने एक से अधिक पत्र-पत्रिकाओं का जिक्र करने लगे। बीते वर्षों के अंतराल में गगनांचल एक ऐसी पत्रिका है। जो मार्च-अप्रैल 2010 में अंक में विभिन्न साहित्य के क्षेत्र में आने लगी। इसलिए प्रवासी हिंदी साहित्य को 'प्रवासी विमर्श' और 'नवविमर्श' के नाम से जानते हैं। सूत्रों के मुताबिक कहा जाता है कि 169 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है। जो निम्न देशों में चर्चा की विषय बन चुकी है।

1. मॉरीशस का प्रवासी साहित्य।

2.अमेरिका का प्रवासी साहित्य।

3. इंग्लैंड का प्रवासी साहित्य।

4. सूरीनाम का प्रवासी साहित्य।

मॉरीशस में प्रवासी साहित्य:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरीशस एक ऐसा देश है। जिसे छोटा देश माना जाता है और टापू के नाम से भी जानते हैं। जहां पर हिंदी लेखन का कार्य कई सदियों से चली आ रही है। इस देश में रहने वालों की संख्या 55% से अधिक है। वहां पर भारत के यूपी और बिहार के गिरमिटिया मजदूर छोटे-बड़े काम को करके अपना जीवन यापन व्यतीत करते थे और मॉरीशस भी अपने आप में एक ऐसा देश है। जो हिंदी को बचाए हुए हैं। हम कह सकते हैं कि मॉरीशस में कई प्रवासी भारतीय रचनाकार प्रवासी साहित्यकार अपनी उपस्थिति दर्ज किए हैं। मॉरीशस के लेखकों में बिहारीलाल रामदेव धुरंधर, विष्णु दत्त मधु, अभिमन्यु अनत और आनंद देवी आदि लेखकों ने हिंदी के क्षेत्र में निरंतर काम कर चुके हैं। इसलिए मॉरीशस में कुछ 7 संस्थाएं खोली गई थी। इन संस्थाओं का नाम इस प्रकार है।

* विश्व संगठन का निर्माण।

* विश्व हिंदी सचिवालय।

* हिंदी प्रचारणी सभा।

* महात्मा गांधी संस्थान।

* आर्य सभा मॉरीशस।

* इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र।

* हिंदी लेखक संघ।

यह सात संस्थाएं ऐसी है। जहां पर प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। उस दौर में लोगों का मनोबल ऊंचा हो गया था। उन्हें लगता था कि अब क्यों न बड़ी-बड़ी संस्थाओं में काम किया जाय। ताकि मॉरीशस के जन्म और प्रतिजन इस संस्था का भरपूर लाभ उठा सके। यह इच्छा प्रवासी हिंदी साहित्यकार सामने श्री रामदेव धुरंधर जी ने कर दिखाया है। एक बात और बताना चाहता हूं कि वह सत्ताईस साल की अवस्था में हिंदी लेखन के क्षेत्र में आए थे और यह हिंदी में कामकाज करने लगे तथा कई वर्षों तक महात्मा गांधी संस्थान में काम किए। उसके बाद इस संस्था को छोड़कर हिंदी लेखन के क्षेत्र में उतर पड़े तथा मॉरीशस में धीरे-धीरे पत्र-पत्रिकाओं का विकास निरंतर होने लगा। उन पत्रिकाओं का नाम इस प्रकार है। जैसे 'सुमन विश्व हिंदी समाचार','विश्व हिंदी पत्रिका', 'आर्योदय दर्पण', 'पंकज पत्रिका', 'बालसखा पत्रिका','इंद्रधनुष पत्रिका', आक्रोश पत्रिका और जनवरी आदिवासी पत्रिकाओं का समायोजन होने लगा। अंत में इसी पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का विकास होता गया। हमें नहीं भूलना चाहिए कि उन प्रवासी लेखकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के संपादन में यह एक ऐसा देश है कि जिसमें कई विधाओं का समावेश किया गया है। मॉरीशस में हिंदी उपन्यास का प्रारम्भ छठे दशक में दशक में हुआ था। जबकि 1960 में बिहारीलाल का लघु उपन्यास 'पहला कदम' जो विधाओं में बहुत ही चर्चित और सुविख्यात है इस प्रकार मॉरीशस में हिंदी को लेकर निरंतर कार्य हो रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में एक विमर्श जिसके संरक्षण के विकास के लिए किया जाता है हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर ने प्रवासी हिंदी साहित्य के संबंध में कहा था कि "रचना अपने मापदंड को खुद तय करती है इसलिए उसके मापदंड को नहीं बनाए जाएंगे उन रचनाओं के मापदंड खुद तय होंगे।"25

वहीं पर मॉरीशस की संस्कृति को देखा जाए तो वहां पर भी भारतीय संस्कृति प्रतिबिंबित होती है। जिसे भोजपुरी भाषा में रहन-सहन और वेशभूषा का अत्यंत व्यापक स्तर रहा है। मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान के प्रवक्ता डॉ हेमराज सुंदर जी ने दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन भोपाल में एक भेंटवार्ता में बताया था कि "मॉरीशस में 50% से अधिक लोग हिंदी भाषा में बोलते हैं और इसका श्रेय बैठकर व्यवस्था को जाता है।"26

जैसे-जैसे लोक संस्कृति का विकास होता गया वैसे- वैसे भारत में भारत से गए भारतीय हिंदुओं ने दिन भर काम करके जब रात्रि में अपने घर पहुंचते थे। तब वे लोग सुबह और शाम को अपने ही घरों या टोली बनाकर भजन-कीर्तन किया करते थे। जहां तक की रामचरितमानस जैसे ग्रंथों में टोली बनाकर सत्संग किया करते थे। भक्ति काल के राम भक्ति शाखा के प्रसिद्ध कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है कि 'बिनु विवेक सत्संग न होई' बिना विवेक और बिना सत्संग से ज्ञान नहीं मिल सकता। इसलिए हम सभी को सत्संग में एक साथ एकत्रित होना चाहिए इस कड़ी में डॉक्टर उदय नारायण गंगू के शब्दों में

"बैठक उनका एक सांस्कृतिक केंद्र था जिसमें सत्संग के अतिरिक्त हिंदी की पढ़ाई होती थी प्रारंभ में हिंदी की पढ़ाई कैथी लिपि के माध्यम से होती थी। कालांतर में देवनागरी लिपि प्रचलन में आई बैठ के शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षक अल्प शिक्षित थे उन्हें व्याकरण और शिक्षण के विधियों का ज्ञान नहीं था शिक्षण आरंभ करने से पूर्व विद्यार्थी अपनी पार्टी पर एक सूती लिखते थे।"27

इसलिए मॉरीशस में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था के साथ लोक संस्कृति कम नहीं रही है यही कारण है कि बड़े-बड़े शिवालयों और पाठ शालाओं में बच्चों को हिंदी सिखाई जा रही है और हिंदी में वाद विवाद निरपेक्षता पूर्वक किया जा रहा है। आज उनका प्रभाव मॉरीशस की धरती पर मिलती है पुनः मॉरीशस के प्रसिद्ध साहित्यकार जय नारायण राय ने कहा था कि" कुछ वर्षों तक हर शाम घंटे 2 घंटे बैठकर न मिटने वाली स्याही में सरकंडे की कलम बोल बोलकर पूरी रामायण नकल करते और जो धर्म के प्रति अपने उत्साह को अभिव्यक्त किया करते थे बहुत से लोग जो भी किताब हाथ लग जाती उसी की नकल कर डालते थे फिर वह कबीर सूरदास या नाटक के भजन आल्हा खंड या सारंगधर की कहानी क्यों न हो।"28

मॉरीशस में लोकगीतों की पृष्ठभूमि:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरीशस में लोकगीतों की चेतना प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने किया है। क्योंकि मॉरीशस में वरिष्ठ साहित्यकार लोकगीतों को बढ़ावा देते थे। इसलिए वहां पर भोजपुरी लोकगीतों की प्रधानता कई सदियों से चली आ रही

है। तथा शर्तबंदी को ध्यान में रखते हुए गिरमिटिया मजदूरों तक पहुंच चुकी है। भारत में नए गिरमिटिया मजदूरों ने विदेश में पहुंचते हैं और प्रवासी मजदूर कहलाने लगे इसी के साथ ही साथ वह लोकगीतों को टोली बनाकर गाते थे। यह यह चेतना जब मॉरीशस के लोगों ने सुना तो एक साथ झुंड में होकर गाने लगे यहां तक कि वे अपनी भारतीय संस्कृति व सभ्यता को याद करना सभी के लिए एकमात्र उद्देश्य रहा है। कभी-कभी गिरमिटिया मजदूर सोचते थे कि भारत की लोक गीतों को कैसे भूल सकूं पहले की कहावत ओं में कहा गया है कि जो कहावतें भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में हो वहीं विदेशों में भी होनी चाहिए। आज 21वीं सदी के दौर में ग्रामीण लोकगीत कहावतें और एक शब्द को अनेक शब्द पलायन होते जा रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने लोकगीतों को आध्यात्मिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से 5 भागों में विभाजित किया जाता है। जैसे लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा,लोक नाट्य और प्रकीर्ण साहित्य।

लोक गीत:- प्रवासी हिंदी साहित्य में लोकगीतों की स्थिति मॉरीशस में बड़े स्तर पर मिलती है वहां पर परम ब्रह्म अनादि और अनंत सर्वव्यापी होता है जैसे गीतों के क्षेत्र में देखा जाए तो नियम है कजरी बिरहा चैता और मीठे गीत आदि का समायोजन एक समूह बनाकर रहते थे। वहीं भारत में भोजपुरी के क्षेत्र में देखा जाए तो बनारस,आजमगढ़, गाजीपुर आदि ऐसे जनपदों में भोजपुरी बोलते और समझते हैं अर्थात देवी और देवताओं के लिए एक गीत प्रस्तुत है।

लाल पताका बजरंगबली का

यारों लाल पताका सदा जी उड़ेला

राम वरदान कड़ई वरदान हड।

एक दुनिया में अमर हनुमान?

लाल रंग मंगल निशान रहेला

यारों लाल झंडा सदा ही उड़ेला।

2 लोक गाथा:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में लोकगीतों के अंतर्गत लोककथा को प्रबंध गीतों के नाम से जाना जाता है। जिसे लोग गाता कहते हैं। इसमें कुछ लोकगाथा के शब्द है जो इस प्रकार प्रस्तुत है जैसे लोरी या लोरी कायन नायक, बंजारा, ढोला मारू आदि जोकि कई वर्षों से गायन के क्षेत्र में प्रस्तुत की जाती थी। लेकिन आज निरंतर ऐसे शब्द भूलते जा रहे हैं। आज धीरे-धीरे समयानुसार होते हुए भी प्रतिकूल की स्थिति में भूलते जा रहे है।

3:- लोक कथा:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में लोक कथा अपनी एक महत्वपूर्ण योगदान है और यह कथा ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार के अन्य सदस्यों में दादा दादी रिश्तेदारों में नाना नानी ने लोरिया छोटी बड़ी कहानी के रूप में सुनाती थी। आज इस तकनीकी की दुनिया में पुराने लोग इस कथा को भूलते एवं पलायन जा रहे हैं। धीरे-धीरे पश्चिमीकरण का प्रभाव मॉरीशस जैसे देश में पड़ने लगी जो निम्न वत है। नीति कथा, पौराणिक कथा, दंत कथा, मनोरंजन कथा, प्रेम कथा और वक्र कथा।

4 **लोक नाट्य**:- प्रवासी हिंदी साहित्य में लोकनाट्य उसे कहते हैं। जिसमें किसी लोक नाट्यकार किसी नाटक पर अभिनय करता है। मानो ऐसा लगता है कि श्रव्य दृश्य के माध्यम से फिल्मांकन दिखाया जा रहा है इसलिए मॉरीशस में लोक नाट्य अधिक प्रचलन है। अर्थात मॉरीशस की जन्मभूमि मैदान में रामलीला राजा हरिश्चंद्र भक्त प्रहलाद महाभारत और इंद्रसभा में आधार बनाकर दिखाया जाता था। इसलिए उन लोगों को आध्यात्मिक रास्तों पर चलने के लिए प्रावधान किया गया आज हिंदी के बड़े कवि कबीरदास, सूरदास और तुलसी ऐसे कवियों में अपनी काव्य रचनाओं में शामिल किए है।

5.प्रकीर्ण साहित्य:- प्रवासी हिंदी साहित्य में लोक गीत, लोक कथा एवं लोकनाट्य के अलावा कुछ तथ्य रह गए है। जिसे मुहावरा के नाम से जानते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रयोग करते हैं। जैसे मुहावरा,पहेलियां, शिशु गीत, लोकोक्तियां साहित्यिक विधाओं में देखा गया है। अंत में मॉरीशस के भोजपुरी साहित्य पर डॉ रामेश्वर पुरी ने 1970 में

मॉरीशस भोजपुरी के नाम से एक नया शोध प्रबंध तैयार किया और काशी विद्यापीठ के भोजपुरी लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन 1981 में डॉ. कुँवर मिश्र ने नामक शोध क्षेत्रों में 151 लोकगीतों को शामिल किया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मॉरीशस की धरती पर लेखन का कार्य करने वाले लेखकों का नाम इस प्रकार है। पंडित वासुदेव, विष्णु दयाल, सोमदत्त बखोरी, बृजेंद्र कुमार, भगत मधुकर, अभिमन्यु अनत, राजेंद्र वरुण, मुनीश्वर लाल चिंतामणि , प्रहलाद रामशरण ठाकुर, दत्त पांडेय, हरिनारायण, सीता दानिश्वर शाम, डॉक्टर उदय नारायण गंगू, इंद्रदेव भोला, इंद्रनाथ, वीरसेन जागा सिंह, दीपचंद बिहारी पुष्पा बंबा,महेश रामजीवन, पूजा नंद नेमा, सुचिता, रामदीन हेमराज सुंदर सुमति संधू सूर्य देव शिवराज अमिता कन्हाई हरिदेव श्री नंदन विजय खेतन लालदेव शिकारी केसली कुमारी राजपथ रामदेव धुरंधर विनोद बाला अरुण राज हीरामन आसाराम फल धनराज शंभू और धर्मेंद्र रिकाई आदि लेखकों ने हिंदी के क्षेत्र में एक नया स्थान दे चुकी है। सबसे बड़ी बात यह है कि मॉरीशस के प्रत्येक प्रवासी रचनाकार विभिन्न विधाओं पर काम कर चुके हैं। जैसे मॉरीशस के हिंदी साहित्य में उपन्यास कहानी नाटक एकांकी कविता यात्रा वृतांत और लोक साहित्य की पृष्ठभूमि निरंतर रही है।

मॉरीशस में कविता की पृष्ठभूमि:-

भूमिका:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरीशस में कविता अपने आप में एक नई दशा और दिशा की ओर मुड़ चुकी है वहां पर प्रवासी भारतीय रचनाकारों ने कविता के क्षेत्र में काम निरंतर काम कर रहे हैं यहां तक कि मॉरीशस में 6 संस्थाओं में हिंदी कविता पर जोर दिया जा रहा है। इसलिए वहां पर महाकाव्य और खंडकाव्य ना होकर बल्कि मुक्तक काव्य में ही हो रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य में भारत के प्रसिद्ध रचनाकार डॉ लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी जी मॉरीशस गए थे। वहां पर जाने के बाद रसकुंज कुंडलिया यह एक ऐसा काव्य पुस्तक मॉरीशस की धरती पर आया। जोकि 1923 में प्रकाशित हुआ था। पूरे बारह वर्षों के अंतराल के बाद 1935 में इनकी दूसरी पुस्तक आयी। उस

पुस्तक का नाम 'शताब्दी सरोज' जोकि बहुत प्रसिद्ध है।

मॉरीशस में एक ऐसी पत्रिका निकलती थी। जिसका नाम है 'हिंदुस्तानी पत्रिका' इस पत्रिका में सर्वप्रथम बृजेंद्र भगत मधुकर द्वारा रचित काव्य ' होली' प्रकाशित होता था। अर्थात लगभग सौ वर्षों से तीस से अधिक मधुकर जी का है। इनका प्रथम संकलन मधुपर्क 1942 में प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार काव्य की दृष्टि से देखने पर उनकी नींद कविता प्रवासी भारतीय जगत में एक नई स्थान बन गई है। इनके कविताओं का नाम इस प्रकार है। वीरगाथा ,रागिनी, मधुकरी, रणभेरी, घुरहू, मौसा के सनेस, रसवंती, मधुलिका, ललकार आदि। उनकी कविताओं में लोकगीत हिंदी गजल बिंब विधान स्पर्श बिम्ब, श्रब्य बिम्ब, गंध बिम्ब, स्वप्न बिम्ब, मिश्र बिम्ब, अलंकार विधान, उपमा, उत्प्रेक्षा,मानवीकरण, रूपक, विरोधाभास, उपन्यास, छंद और विधान शब्द विधान सामने आता है। लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी 'रसपुंज' नामक कविता में लिखते हैं कि

जसको श्रम अति असह सताया,

"अपना जीवन आप गवाया।

कितने फाँसी आप लगाए,

गिरी से गिरे के प्रणाम गवाये।

गोरे करत बटु प्रहारा

चोट खाय तजसे संसारा।"34

2:- अमेरिका का प्रवासी हिंदी साहित्य:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में अमेरिका अपने आप में समृद्धशाली देश है। जहां पर हिंदी लेखन के क्षेत्र में काम किया जा रहा है तथा इसमें कई प्रवासी भारतीय लेखकों ने कई वर्षों से काम कर रहे हैं। अमेरिका में रहकर कई विधाओं को प्रवासी जगत में समेट लिया है। इसमें उपन्यास कहानी कविता नाटक आदि विधाओं में लिख रहे हैं। आपको बताना चाहता हूं कि वे प्रवासी भारतीय जो अपनी संस्कृति सभ्यता और

लोकगीतों को विधाओं में समेट लिया है। अगर वहीं अमेरिका प्रवासी भारतीय लेखकों का नाम जिक्र करे तो नींद प्रवासी साहित्यकार सामने उभर कर आते हैं। जो इस प्रकार है। रामेश्वर अशांत, स्वर्गीय डॉ वेदप्रकाश बटुक, डॉ राम प्रकाश अग्रवाल, डॉ बलदेव शर्मा प्रोफेसर रामचौधरी, डॉ. विजय मेहता, डॉ. संवेदी, स्वर्गीय डॉ अंजना अधीर और सुदर्शन प्रियदर्शिनी आदि लोगों के नाम विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिलते है। कई देशों की तुलना में अमेरिका भी हिंदी के क्षेत्र में कम नहीं है। वहां पर हिंदी की रूपरेखा को आगे बढ़ाने के लिए तीन पत्रिका प्रकाशित होती थी। प्रथम पत्रिका के अंतर्गत बाल हिंदी जगत जो न्यूयॉर्क मेरा कर संपादन कर रही है। दूसरा विज्ञान गीता जो कि प्रो. राम चौधरी स्वयं अपने आप में कर्मठशील और वह प्रसिद्ध वैज्ञानिक है। इनका नाम हर जगह दिखाई पड़ता है इसी कड़ी में ध्यान में रखते हुए डॉ मीना कौली लिखती है कि "प्रवासी हस्ताक्षर डॉ अंजना अधीर ने भारत और अमेरिका के बीच सेतु निर्माण किया इस ग्रंथ का संपादन करके अंजना जी ने साहित्य की सेवा का साधुवाद किया है।"35

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमेरिका में प्रवासी हिंदी साहित्यकार नवप्रभात के लिए विदेश में गए और अपनी लेखनी को कर्मठता पूर्वक आगे पढ़ाते गए। जिस प्रकार से अधिकांश भारतीय समाज को शर्त बंदी प्रथा बनाकर मजदूरों को पैसों का लालच देकर ले गए , क्या उन्हें अपने परिश्रम का मुनाफा मिला। यह भी बड़ी तर्कपूर्ण बात है वास्तव में अमेरिका में जिस तरह की रहन-सहन है उस प्रकार भारत अपने आप में एक अच्छा संस्कृति माना जाता है। आज अमेरिका में हिंदी का पठन-पाठन का कार्य दो कथा ऑडियो में किया जा रहा है। इसलिए वहां पर विश्व भर में अपनी एक समृद्ध सारी भाषा बनी हुई है। जैसे प्रवासी भारतीयों में अमेरिका कनाडा मेक्सिको और यू. एस. ए में 25 लाख से अधिक लोग हैं।

जनवरी 2006 में अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने अरबी,उर्दू और फ़ारसी आदि भाषाओं को समृद्ध बनाने का संकल्प लिया था। केवल इतना ही नहीं बल्कि हिंदी भाषा की आधार बनी 1913 में निर्णय लिया गया था कि लाल हरदयाल जी ने भाषा को सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में जोड़कर प्रवासी भारतीयों के लिए

संविधान सम्मत के रूप में काम करने का दृढ़ संकल्प लिया था। फिर भी 1946 से 1947 में यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिलवेनिया में दक्षिण एशियाई विभाग खोला गया। ताकि वहां की संस्था में हिंदी सीखने वालों की संख्या नहीं थमी। आप इसी से आकलन कर सकते हैं कि नौवें दशक से लेकर 21 वी शताब्दी के पहले के दशक तक सौ से अधिक विश्वविद्यालयों का निर्माण किया गया। केवल इतना ही नहीं उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी की पूरी व्यवस्था हो चुकी थी। इस तरह से अमेरिका में रविवार के दिन भी हिंदी में काम किया जा रहा था। इस प्रकार 9 प्रवास में स्वर्गीय कुंवर चंद्रप्रकाश की प्रेरणा से 18 अक्टूबर 1980 में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति का निर्माण किया गया। इस समिति से कई पत्रिका निकलती थी। जहां पर नए युवक एस उत्पादों से बांध दिया है और स्वर्गीय रामेश्वर अशांत ने 1989 विश्व हिंदी समिति का गठन किया गया था। आगे चलकर त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होने लगा और कई दिनों बाद सौरभ पत्रिका निकाली गई थी। आज अमेरिका तक सीमित नहीं, बल्कि दुनियाभर में इस पत्रिका को पढ़ा जा रहा है। इसी कड़ी में श्री श्याम त्रिपाठी जी ने चेतना पत्रिका को निकाला जो कि कनाडा में प्रकाशित की जाती थी। आधुनिक दौर में इस पत्रिका का संपादन श्रीमती सुधा ओम ढींगरा कर रही थी।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अमेरिका में हिंदी लेखन की परंपरा कम नहीं दिखती क्योंकि वहां पर जितने भी लेखक लेखिका हुए हैं। सभी अपने आप को हिंदी की गतिविधियों को आगे पहुंचा चुके हैं। इसलिए अमेरिका में आज हिंदी को कई पैमानों के आधार पर की जाती है। आंकड़ों के अनुसार बताना चाहता हूं कि अमेरिका में अब तक 132 का प्रसंग और 52 कहानियों का संकलन के अलावा उपन्यास के क्षेत्र में देखा जाए तो 13 नाटक एकांकी पांच लेख संग्रह और इतिहास के विषयों पर 13 पुस्तकें तथा 4 संस्मरण यात्रा वृतांत प्रकाशित हो चुके हैं।

इसी के साथ अमेरिका के अलावा कनाडा के कई प्रवासी भारतीय लेखक एवं लेखिका का नाम इस प्रकार है। जो वहां की गतिविधियों को देखकर हिंदी में एक नया स्थान प्राप्त कर चुके हैं। जैसे श्रीमती मधुवाप्र्णेय, श्री नरेंद्र भागी, आचार्य शिव शंकर द्विवेदी, राज शर्मा श्री श्याम त्रिपाठी श्री नाथ द्विवेदी श्री समीर लाल जसवीर, कलवीर,

डॉक्टर भूपेंद्र सिंह, श्री हरदेव सोढ़ी, श्री भुवनेश्वरी पांडेय और श्री कुमार सेनी आदि लेखकों ने 72 पुस्तकों का प्रकाशन करवाया था।

"आज विश्व भर में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया जा रहा है। कमल किशोर गोयनका जी कहते हैं कि " विश्व में हिंदी का बोध और प्रयोग साहित्यिक केंद्रों एवं विभिन्न शिक्षा संस्थाओं में हिंदी शिक्षण को प्रोत्साहन तथा हिंदी पीठों की स्थापना संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को एक अधिकृत भाषा बनना और भारतीय संस्कृति के मूल्यों का प्रचार प्रसार इस प्रकार विश्व हिंदी न्याय अमेरिका में हिंदी भाषा साहित्य एवं संस्कृति यों को जोड़कर भारतीयता के प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य रहा है।"37

अमेरिका में रहने वाले प्रवासी लेखक एवं लेखिकाओं ने अपनी कविताओं के माध्यम से हिंदी की कविताओं को एक नया मोड़ प्रदान किया है। जैसे डॉ सुधा ओम ढींगरा की समाधि में एक कविता। 'मेरा दावा' और डॉ अंजना अधीर ने इसी प्रकार एक कविता लिखी है 'यह कश्मीर है बाद' में अंजना अधीर ने 'सात समुंदर पार' नाम नामक कविता देखने को मिलती है। इसलिए यह कहा जाता है कि अमेरिका में रहने वाली लेखिका भी कविता के क्षेत्र में नया आकार देती है। जिस कविता को लिखती हैं तो उन्हें अपना ही लगता है और बेगाना भी लगता है या एक प्रवासी भारतीयों की पीड़ा है। जो कविता में आकर समेट लेना चाहती है। इस कविता को देखते हुए अफरोज ताज की गजलें जिंदगी की हकीकत को बयां करते हैं। जो इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

"अगर दीवार न होती

अगर हम साथ रह लेते

हमारे अगनों में कोई भी झगड़ा नहीं रहता।"38

हिंदी का प्रवासी साहित्य कमल किशोर गोयनका पृष्ठ संख्या421-22 प्रकाशन गाजियाबाद

रमेशशौनक के अनुसार:--

"मेरा देसी मन/

दिन भर में बीसियों बार/

सात समुंदर पर/

लौट लौट जाता है।"39

हिंदी का प्रवासी साहित्य कमल किशोर गोयनका पृष्ठ संख्या421-22 प्रकाशन गाजियाबाद

अमेरिका के लेखक डॉक्टर विनोद गोयल के अनुसार:-

"भागे वापस अपने देश को

गाते हुए यह गाना

सारे जहां से अच्छा यारों हिंदुस्ताना।"40

अमेरिका में वेद प्रकाश बटुक की कई कविताएँ प्रवासी जगत में अपना स्थान बना चुकी थीं। आज उनकी कविताएं कई रूपों में मिलती है। गुलाब जी ने स्वयं अपनी कविता पर प्रकट करते हुए कहते हैं कि जैसे त्रिविधा बंधन अपने देश पराया नीलकंठ ना बन सका लोटन बनवास में बाहुबली बाहों में लिपटी दूरियां उत्तर राम कथा व अभिव्यक्त द्वापर आदि रचनाएं सामने आती है। वेद प्रकाश बटुक के बाद गुलाब खंडेलवाल का नाम आता है। जो कि अमेरिकी काव्य संग्रह में महत्वपूर्ण हैं। जिन्होंने भारत में रहते हुए भी अपनी हिंदी कविता को भारतीय संस्कृति अमेरिका की संस्कृति से जोड़ रखे हैं। आज भारत से लेकर अमेरिका में अपनी स्थान बना चुके हैं। गुलाब खंडेलवाल की कविता निम्न रूपों में परिलक्षित होती है। इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है। जैसे चांदनी उषा अहिल्या मेरे भारत मेरे स्वदेश धूप की छांव सौ गुलाब खिले

आलोक वृत्त शब्दों से परे और कस्तूरी मंडल आदि महत्वपूर्ण रचनाएं काव्य के रूप में आने लगी। गुलाब खंडेलवाल ने ईश्वरीय आस्था के प्रति प्रकट करते हुए कहते हैं कि

"क्यों ना वह मेरे निकट न आया

तुलसी ने मीरा ने जिसको सहज भाव से पाया

पर उसका कोई दोष नहीं था।

यह तो मेरे निकट यही था।

मेरा ही मन और कहीं था।

भागों से भर पाया।" 41

इसी तरह से गुलाब जी कविता लिखते हैं। उसी तरह से वह हर किसी से निकट नहीं था। पर बड़े सहजता से मिलते थे और अपनी बातों से किसी को भरमाया नही, बल्कि उसे निरपेक्षता पूर्वक संवाद करते हैं। यही प्रवासी भारतीयों की कसौटी जो हर किसी की संवेदनाओं को आगे ले जाती है।

"गुलाब जी के काव्य का मूल विषय प्रेम है किंतु प्रेम की दूरी पर घूमते हुए उनके मन से भक्ति दर्शन एवं धर्म आदि प्रत्येक विषय पर अपनी काव्य सर्जना की है अतः कहा जा सकता है कि गुलाब खंडेलवाल का भाव संसार बहु आयामी है।"42

इस तरह गुलाब जी ने स्वयं अपनी कविता पर विचार प्रकट करते हुए कहते है कि

"शून्य पर सेतु बांधना है यह

प्राण की महा आराधना है यह

एक पल के विराट दर्शन को

एक आमरण साधना है यह।" 43

अमेरिका में अध्ययन और अध्यापन का कार्य:-

अमेरिका में अध्ययन एवं अध्यापन के कार्यों में प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की भूमिका रही है। वहां पर अध्ययन एवं अध्यापन के लिए कम से कम सौ से अधिक संस्था खोली जा चुकी है और पच्चीस ऐसे विश्वविद्यालय है। जहां पर हिंदी के लिए रुकता नहीं बल्कि समरूपता के रूप में किया जा रहा है और उच्च शोध संस्था का निर्माण किया गया था। इस संस्था का निर्माण के इसलिए किया गया था कि अमेरिका में रहने वाले व्यवहारिक ज्ञान को देखते हुए की गई थी। द्वितीय विश्व के दौरान ही हेनरी होनिगन्स वाल्ड अपनी पुस्तक 'स्पोकन हिंदुस्तानी' में समकालीन बोलचाल की भाषा को इस पुस्तक में स्थान दिए है। यह प्रवासी भारतीय साहित्यकारों के लिए गर्व की बात थी। उस दौरान में अमेरिका जैसे देश में एक कहानी निकलती थी। गुर्जर की गूंज नामक पत्रिका का प्रकाशन इसी दिशा में उन्मूलन होने लगा और धीरे-धीरे हिंदी की यात्रा बढ़ने लगी तथा विभिन्न साहित्यकारों की सबसे बड़ी संघर्ष थी। जिन्होंने अपने घर द्वार को छोड़कर हिंदी में पठन-पाठन के कार्यों को सफल बनाया।

" हिंदी का विधिवत अध्ययन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शुरू हुआ था। भारत और अमेरिका के बीच नए आर्थिक संबंधों का सूत्रपात हुआ। इस संदर्भ में विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र अर्थशास्त्र राजनीति शास्त्र आदि के विद्वानों ने अपनी दृष्टि भारत की समकालीन समस्याओं पर विचार करने के लिए डाली।"44 अमेरिका में अध्ययन और अध्यापन को देखते हुए प्रवासी भारतीय साहित्यकारों के लिए शिक्षण सामग्री के लिए कौन-कौन सी चीजें जरूरी है। जो इस प्रकार है। शिक्षण सामग्री, सहायक शिक्षण सामग्री, विभिन्न संस्थाएं, हिंदी पत्र पत्रिकाएं, सिनेमा चलचित्र, वीडियो फिल्म, आकाशवाणी। आदि शिक्षण कार्यों के लिए प्रवासी भारतीयों ने हिंदी में शिक्षण के माध्यम इन सभी साधनों का प्रयोग किया है। चाहे वह कोई कविता, उपन्यास, या नाटक क्यों न हो? अर्थात सभी विधाओं को केंद्र में रखकर प्रवासी हिंदी लेखक एवं लेखिकाओं ने अमेरिका में जाकर एक नई पीढ़ी उन्मुख करने का प्रयास किया है।

(3) **इंग्लैंड का प्रवासी हिंदी साहित्य:--**

भूमिका:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में इंग्लैंड का प्रवासी साहित्य हिंदी सेवा के क्षेत्र में प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इसी कड़ी में पत्र-पत्रिकाओं का संकलन के साथ ही साथ विभिन्न विधाओं पर काम किया है। वहीं विधाओं का नाम ले तो कहानी उपन्यास कविता और नाटक के क्षेत्र में श्रम एवं दृश्य के माध्यम से दिखाया जा रहा है तथा इंग्लैंड में हिंदी को लेकर कई काव्य सम्मेलनों में कविता का वाचन किया जा रहा है। इसलिए वहां पर कई प्रवासी हिंदी लेखकों ने जमीनी स्तर से कार्य कर रहे हैं। कहा जाता है कि इंग्लैंड में अंग्रेजों का बहुत दबदबा रहता है। अंग्रेजी को लेकर लेकिन प्रवासी लेखकों ने किस तरह भारत से इंग्लैंड में हिंदी की पृष्ठभूमि बनाई यह हम सभी को गर्व की बात है। इसलिए वहां अंग्रेजी ज्यादा बोलते हैं। क्योंकि अंग्रेजों का प्रभाव अंग्रेजी भाषा पर दिखाई पड़ता है। वे लोग कभी नहीं चाहते थे कि इंग्लैंड में हिंदी जैसी भाषा कोई कार्य हो, क्योंकि वह लोग हिंदी को बहुत हीन से देखते हैं और हिंदी में बोलना उनके लिए शर्म की बात थी। यहां तक कि प्रवासी हिंदी साहित्यकार ने जब भारत से इंग्लैंड की धरती पर गए तो वहां पर भारतीय संस्कृति नहीं मिली। जो मॉरीशस में दिखाई दिया है। आप लोगों को बताना चाहता हूं कि जिस समय प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने विदेश की धरती पर हिंदी की झंडा स्थापित कर चुके हैं। आज कई प्रवासी साहित्यकार के नाम मिलते हैं। जैसे दक्षिण से राजन श्रीवास्तव, विश्वनाथ अय्यर, मधुकर राव चौधरी और उत्तर भारत से नामवर सिंह, अशोक बाजपेई, विद्यानिवास मिश्र और कमलेश्वर जैसे लेखकों की जरूरत थी। जो आज उन्हें याद किया जाता था और लंदन में आयोजित होने वाले 'छठे विश्व हिंदी सम्मेलन' में सरकारी प्रतिनिधि के एक सदस्य एयर इंडिया के 'जंबो जेट विमान' पर बैठा सोच रहा था कि इंग्लैंड किसी अन्य देशों की तुलना में कम नहीं रहा। वहां पर हिंदी सीखने वालों के लिए कई संस्थाएं खोली गई थी। क्योंकि इंग्लैंड के लोग भारतीय भाषा हिंदी को सीख कर एक नया आयाम दे सके। जिसे प्रवासी भारतीय लेखकों का सर ऊंचा हो सके। यह सबसे बड़ा उद्देश्य प्रवासी रचनाकारों के लिए तथा प्रत्येक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में हिंदी के अध्यापक मातृभाषा हिंदी में लेखन का कार्य कर रहे हैं। उन्हें

अंग्रेजों के सामने अंग्रेजी भाषा को सुनकर और अपनी हिंदी भाषा बोल कर अपने आप को गर्व महसूस करते थे। भले ही हिंदी की तुलना में अंग्रेजी अधिक बोली जाती क्यों न हो? लेकिन हिंदी किसी भाषा से बिल्कुल कम नहीं है। यही कारण है कि इंग्लैंड जैसे देश में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य जोरों शोरों पर किया जा रहा है। इसे हमें समझना होगा प्रवासी हिंदी लेखक अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं तथा 169 विश्वविद्यालयों से अधिक हिंदी में बच्चे पढ़ रहे हैं। फिर भी अंग्रेजी और हिंदी को लेकर जो विवाद वह विदेशों मे चलता था। कुछ समय के लिए राजभाषा राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा की और अपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ताकि भारत में भी वही स्थिति थी। जो इंग्लैंड में हुआ हिंदी और उर्दू को लेकर कई वर्षों तक मुकदमा चलता रहा। अंत में आकर हिंदी की विजय हुई और संसार प्रत्येक जनपदों और राज्यों में हिंदी भाषा का अपना स्थान बना लिया और अंत में जब प्रवासी रचनाकार इंग्लैंड में भी हिंदी को एक नया आयाम दिया है।

"2010 ईस्वी में लंदन के नेहरू सेंटर में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस आयोजन में तीन प्रवासी भारतीय साहित्यकारों को साहित्य की सेवा के लिए पुरस्कृत किया। जिनमें 'सुरेखा चावला' को हिंदी सेवा सम्मान इस्लाम चुनारा को संस्कृति सेवा सम्मान तथा नीलम सिंह को हिंदी समन्वय सम्मान प्रदान किए गए। इस समारोह में मुख्य अतिथि केदारनाथ त्रिपाठी थे तथा संचालन सुरेश अवस्थी जी ने किया था। "45

जिस तरह लंदन में नेहरू सेंटर का निर्माण किया गया। उसी प्रकार इंग्लैंड में भी हिंदी के लिए कार्यालय खोला गया। लेकिन इंग्लैंड भी विश्व का पहला राष्ट्रीय है और राष्ट्र हित के लिए एक पत्र का प्रकाशन हुआ उस पत्र के संपादन में प्रसिद्ध कलाकार नरेश हुए थे। प्रकाशन सन 1883 ईस्वी में किया गया था और भारतीय स्वतंत्रता के अभूतपूर्व का पूर्ण योगदान है। यही बाहर से रह कर प्रवासी लेखकों एवं लेखिकाओं ने इंग्लैंड में हिंदी भाषा को सशक्त बनाया। कविता के क्षेत्र में दिव्या माथुर ने 15 वर्षों से इंग्लैंड में रहकर सर्जनात्मक रूप से भाषा को संख्या थी। इनका एकमात्र प्रतीत होता है कि वह इंग्लैंड में रहते हुए भी मातृभाषा हिंदी को विश्व भर में कविता को लिखकर

स्थापित किया। इनकी तीन काव्य संग्रह है। जो इस प्रकार है अंत सलिला, ख्याल, रेत का लिखा(1985) जब यह तीनों कविताओं को पढ़ते हैं। लगता है कि वह कविता में वह भाव संवेदनाएं छिपी हुई है। लोगों का बताती है कि कविता जीवन एक नया मोड़ देती है। जो चीज देखा सोचा और समझा तो समझिए लेखिका के लिए कविता का नए नए सिरे से जोड़ना उनकी एक उत्तरदायित्व था। जो इंग्लैंड में रहकर की थीं। उनकी कविता देश समाज और गांव के लिए सकारात्मक सोच को आगे ले जाती है। यह समझिए की उनकी ख्याल काव्य संग्रह में लगभग 108 कविताएं है। छोटी-छोटी कविता को एक नए काव्य संग्रह में समेट ली है और अंत में उनकी तीसरी कविता संग्रह रेत का लिखा जो कि उन्यासी कविताएं मिलती है। कमल किशोर गोयनका ने रेत पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि "रेत पर लिखा शीर्षक विषय के साथ कवियत्री का दार्शनिक दृष्टि का प्रतीक है। रेत पर क्या लिखा जा सकता है और जो भी लिखा जो हो सकता है। वह क्षणभंगुर होगा रेत रेत के टीले सागर का रेतीला तक और रेत पर लिखी हुई इमारतें सभी क्षणभंगुर है सभी का जीवन कुछ क्षणों का होता है।"46 आगे चलकर दिव्या माथुर जी ने भौतिकता व उपभोक्ता संस्कृति को जीवन के विभिन्न पहलुओं को एक साथ जोड़ती है। इसी को केंद्र में रखते हुए भारत की जीवन दृष्टि पर गहरा प्रभाव प्रतीत होता है।उनकी कविताओं में विशेषकर जो प्रतिभाएं हैं ।वह नव गुरु को जोड़ती है तथा अन्य कविताओं उद्घाटित शब्द निम्न है। जैसे बेचारी सही शुरू विचार मां के सामने मरीचिका होली का गुलाब जन्मस्थली का ब्रह्मा सब धर्मों से ऊंची क्षणभंगुर ता और कठोरता आदि की एक विशेष गुण दिखाई पड़ता है दिव्या माथुर की कविता रेत पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करती हुई कहती है कि

"कब समझूंगी रेत हूं मैं

और बाहर सब है रेगिस्तान।" 47

दिव्या माथुर की जितनी भी कविताएं आई। सभी के सभी नए-नए पहलुओं को जोड़ती है सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी कविता में मानव जीवन की सराहनीय ता क्षणभंगुरता चलना और संतोष और तृप्ति अकेलापन और प्रेम हीनता आदि जैसे नए-नए शब्दों को उजागर करती है। इस प्रकार से अर्चन दीप सन 1995 कृष्ण अनुराधा ने

इस गीत संग्रह को अनुभव हीनता से नहीं जुड़ती है। यह एक प्रसिद्ध गजलों में से मानी जाती है और एक एक शब्द अनुभूतियों को एक समृद्ध सगन और संस्कृति को सास्वत बनाई है। सच तो यह है कि जब हम किसी भी लेखक एवं लेखिकाओं द्वारा रचित गीतों को पढ़ते हैं। पुनः संस्मरण महादेवी वर्मा याद आने लगती है। क्योंकि जो दुख है। वह समाज के सामने ला रखती थी। आज उनकी कोई भी गीत संग्रह को पढ़िए, मानो लगता है कि यह दुख दर्द वेदना उनकी हृदय में नहीं, बल्कि अपनी अपनी कविताओं में समेट ली है। यह कवयित्री की सबसे बड़ी संवेदना है। इसीलिए कृष्ण अनुराधा जी इंग्लैंड में रहकर अपनी अनुभूतियों का परिवेश भारतीयता की संस्कृति झलकती है। इस तरीके से अपनापन लगाव में जब कोई लेखिका भारत से इंग्लैंड जाती है। अपनी स्वदेशी पन की याद आने लगती है। आप समझ सकते हैं कि उस दौर में विभिन्न लेखक एवं लेखिकाओं की क्या स्थिति व परिस्थिति रही होगी? आज नए-नए उपादानओं के प्रतीकों, बिम्बों तथा भाषा शैली को अपनी करुणा संवेदना सद्भावना के साथ ही साथ प्राकृतिक रूपों में अपने गीतों को पीरो डालती है।

इंग्लैंड में हिंदी पत्र-पत्रिका:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में इंग्लैंड की हिंदी पत्र पत्रिकाएं जनवरी में मिलती है। जैसे इंग्लैंड में एक पत्रिका निकलती थी। जिसका नाम 'पुरवाई पत्रिका' जोकि बहुत प्रसिद्ध और चर्चित भी है। इस पत्रिका में कई शोध आलेख के रूप में नए-नए कविताओं का समायोजन किया गया था। डॉ. पद्मेश गुप्त ने 'पुरवाई पत्रिका' में कविता के क्षेत्र में कार्य करने लगे। यहां तक कि वह 10 नई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय काव्य आयोजनों के सदस्य भी रह चुके थे। उनकी जितनी भी कविताएं है ।सभी हिंदी में है और हिंदी में बड़े सलाहकारों में वाचन भी करते थे। इसलिए आज भी इंग्लैंड में भी इस पत्रिका की बहुत बड़ी उपलब्धि है। आगे चलकर इंग्लैंड में हिंदी पत्रिका को विकसित करने के लिए भारत के प्रसिद्ध उच्चायुक्त रहते हुए भी डॉ. लक्ष्मी मल सिंघवी ने इंग्लैंड जाकर भारत की संस्कृति को जिंदा रखी और हिंदी विकास के कार्यों पर निकल पड़े। उन्होंने एक पत्र में संबोधित करते हुए लिखा था कि " भारतीय उच्चायोग के कार्यालय में एक सही हिंदी का टाइपराइटर भी नहीं था परंतु उन्होंने अपने कार्यकाल की समाप्ति के बाद जब

इंग्लैंड से विदा ली तो वहां कई हिंदी के बड़े कार्यक्रम ही नहीं हुए बल्कि वहां पर कई संस्थाएं स्थापित हुई।"48

इंग्लैंड में रहते हुए डॉ. लक्ष्मी मल सिंधवी जिस तरह से हिंदी के क्षेत्र में कार्य किया था। आज उन्हें आधुनिक परिवेश में याद करना चाहिए। यही कारण है कि आज इंग्लैंड मैं कई प्रवासी भारतीय लेखकों का बहुत बड़ा योगदान है। आज भी इंग्लैंड में हिंदी की विजय पताका बज रही है। आपको बताना चाहूंगा कि जिस समय इंग्लैंड में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिसे नवाबों का शहर के नाम से जाना जाता है। लेकिन वहां के पूर्व मेयर प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ दाऊजी गुप्त के पुत्र पद्मेश गुप्त हिंदी समिति यूके के एक संयोजक के रूप में काम किया है। इसलिए पिता और पुत्र का संबंध स्पष्ट मिलता है। डॉ. पद्मेश गुप्त जी ने 'प्रवासी पुत्र'काव्य संग्रह में कहा है कि "

मैं नहीं जानता

किस पद पर जा रहा हूं

लेकिन तुम तक पहुचूंगा जरूर।"49

उन्होंने लंदन में रहकर 11 और 14 सितंबर 1997 को लंदन में यूरोप में द्वितीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी व भारतीय भाषा सम्मेलन किया और वहां पर कई लेखकों की उपस्थिति में कवि सम्मेलनों में भाग लिया। जिनका नाम इस प्रकार है डॉ लक्ष्मी मल सिंधवी का कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग रहा। भारत के सिंधवी कई प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी अपनी कविता को पढ़कर हिंदी को एक उच्च दर्जा प्राप्त किया। उन लेखकों का काम है। जैसे वाचस्पति उपाध्याय, बाल्मीकि बैरागी, रामदरश मिश्र, कुंवर बेचैन, जगदीश चतुर्वेदी, निजाम, डॉ. दाऊजी गुप्त, डॉ कैलाश बाजपेई, शंभू प्रसाद सिंह, उषा वर्मा, उषा राजे सक्सेना और सतीश चंद्र आदि उच्चायोग को सफल बनाया। उन सभी साहित्यकारों का व्यापक सहयोग रहा। आज इंग्लैंड में रहकर डॉ. पद्मेश गुप्त जी ने 'पुरवाई पत्रिका' का संपादन प्रत्येक सप्ताह निकालते थे। जो कि इंग्लैंड के लेखकों ने विचार किया कि जब तक इस पत्रिका का विमोचन नहीं किया जाएगा। तब तक पत्रिका को हिंदी की दर्जा नहीं दिया जाएगा। अंततः यह इंग्लैंड के कवियों का सहयोग

पूर्ण रूप से रहा। इसमें किसी भी प्रकार का संदेह नहीं है। जैसे डॉ रंजीत सुमरा, डॉ कृष्ण कुमार डॉ. सचदेव, महेंद्र वर्मा, उषा वर्मा, सोहन राही और कृष्णा पांडेय आदि लेखकों ने सच्चे लगन के साथ सहयोग किए। इंग्लैंड में डॉ. पद्मेश गुप्त पुरवाई पत्रिका का संपादन का पहला अक्टूबर 1997 में प्रकाशित किया गया था तथा भारतीय समाज की स्वाधीनता के 50 वर्ष पूर्ण होने के बाद विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प ले लिया था डॉक्टर लाल विमल सिंघवी ने कहा था कि "यह पत्रिका भारतीय अस्मिता की मलयज शीतल से बाजार लेकर पश्चिम में पूरब का सांस्कृतिक संदेश और उनकी सकारात्मक सनातन सुरभि प्रत्ता प्रसारित करेगी।"50

कहा जाता है कि इंग्लैंड में प्रकाशित होने वाली पत्रिका पुरवाई पत्रिका के पहले अंक में लगभग 20 लेखकों ने हिंदी के क्षेत्र में लगातार काम किए और विधाओं के क्षेत्र में चाहे कहानी हो उपन्यास हो या कविता या कोई अन्य विधा क्यों न हो अर्थात सभी विधाओं में काम किया गया था। इस पत्रिका के प्रेरणा से कई प्रवासी लेखकों ने अपनी अपनी रचनाओं को लिखकर साहित्य गति विधियों को आगे बढ़ाया उन सभी कवियों के नाम इस प्रकार है जैसे डॉ सुरेंद्र अरोड़ा का लेख 'लंदन' विश्वनाथ प्रताप सिंह के बहाने कुछ मार्मिक प्रसंग आदि लेखकों ने काम किए हैं।

इंग्लैंड में पुरवाई एक ऐसी पत्रिका थी। जो मानवीय मूल्यों को नए क्रियाकलापों के माध्यम से जोड़ती है। अर्थात हिंदी को सीमित न करते हुए अध्यापक स्थान रहा है। आज हमें 'पुरवाई पत्रिका' में काम करने वालों का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। क्योंकि उन्होंने इंग्लैंड में जाकर हिंदी विधाओं पर काम करना कोई आसान बात नहीं थी सभी प्रवासी लेखकों को एकजुट एकत्रित होना ही हिंदी अपने आप में आगे बढ़ी है अंत में भारत के उच्चायुक्त रहते हुए भी इंग्लैंड में जाकर हिंदी को नए भारतीय संस्कृति के पायदान को आगे बढ़ाया इसी के साथ डॉक्टर दाऊजी गुप्त और पुत्र पद्मेश गुप्त के साथ अन्य रचनाकार का योगदान रहा है

सूरीनाम का प्रवासी हिंदी साहित्य:--

प्रवासी हिंदी साहित्य में सुरीनाम का प्रवासी हिंदी एक ऐसा देश है। जहां पर

हिंदी को प्रचार प्रसार की जा रही है। यह प्रचार प्रसार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न प्रवासी भारतीय लेखकों द्वारा रचित विधाओं के अंतर्गत किया जाता है। आज भी सूरीनाम में रह रहे प्रवासी हिंदी साहित्यकार की भूमिका स्थापित हुई है। इसलिए साथ में विश्व हिंदी सम्मेलन 6- 9 जून 2003 में हुआ था। उस शहर का नाम 'पारा मारी' जो सूरीनाम देश में है। और हिंदी की नींव स्थापित किया है तथा वे भारतीय लोग भारतीय धरती को छोड़कर विदेश में जाकर बसना और लेखन का कार्य करना एवं हमारी भारतीय संस्कृति वेशभूषा रहन-सहन और विभिन्न त्योहारों का गठन करना यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों के लिए इस कड़ी में छठे में 'विश्व हिंदी सम्मेलन' सम्मेलन के समन्वयक समिति का गठन की पहली बैठक 8 जनवरी 2003 साउथ ब्लॉक में हुई थी। यही कारण है कि सुरीनाम का प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान रहा है इसलिए वहां पर हिंदी का प्रभाव रहा है।

प्रवासी साहित्य मैं सूरीनाम में हिंदी के लिए पूर्व गोलार्ध से पश्चिम गोलार्ध एक ऐसा विश्व यात्रा का आयोजन किया गया। वहां बढ़ती हुई भारतीयों की तादाद स्थिति को देखकर आबादी के क्षेत्र में 40% उपस्थित रहे। सूरीनाम में आबादी की संख्या बढ़ी है और वहां पर 134 मंदिरों का निर्माण किया गया था। आज भी वहां पर कई भारतीय धर्म का पूर्वावलोकन के मंदिरों में विधि विधान से पूजा पाठ किया जाता है। इसमें प्रवासियों की संधि और नहीं हिंदी को लेकर मतभेद जैसे-जैसे भाषा का विस्तार होता गया। प्रवासी भारतीयों की संख्या अपनी चरम सीमा पर थी। चाहे कोई भी देश हो जहां भारतीयों की भाषा की जरूरत होती है। वहां संसाधन की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए। तभी हिंदी भाषा का क्षेत्र व्यापक होगा। डॉ अमित चंद्र शर्मा ने हिंदी शिक्षण के लिए बालपोथी पीजी में लिखी गई थी। उसी प्रकार सूरीनाम में सुव्यवस्थित हिंदी शिक्षण की शुरुआत श्री बाबू महातम सिंह को दिया जाता था। आज भी देश की धरती पर 50 से अधिक हिंदी सेवा के लिए हिंदी शिक्षक के रूप में है बाबू महातम सिंह का हिंदी के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज देखा जाए तो लगभग छः सौ ऐसे विद्यार्थियों ने हिंदी बोलना, लिखना और पढ़ना आदि का संस्मरण करा रहे हैं यह प्रवासी भारतीयों के लिए गर्व की बात है कि सूरीनाम की धरती पर पैर रखकर हिंदी का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। एक बात जरूर है कि वह अंग्रेजी की तुलना में हिंदी को

छोटा नहीं मानते हैं बल्कि उसे उच्च शैक्षिक तौर पर कर्मठ सील भाषा मानते हैं।

सूरीनाम में ऐसे कई कवि का नाम उल्लेख किया जाता है। जैसे लेखकों में मुंशी रहमान खान जिन्हें सुरीनाम का आदि कवि कहा जाता है। इनके द्वारा रचित रहमान दोहा शिक्षावल्ली और राम लाल शर्मा की वेद बंदना के रूप में 9वीं शताब्दी के आसपास प्रारंभ हुआ था। आज सूरीनाम में एक से अधिक प्रवासी भारतीयों की संख्या नहीं है। जो इस प्रकार है। पंडित लक्ष्मी प्रसाद (बग्गा), श्री मंगल प्रसाद, बाबू चंद्रमोहन रणजीत सिंह, महादेव, अमर सिंह रमण डॉक्टर जीत नारायण सुरजन बरोही पंडित हरिदेव सहतू रामनारायण छाव रामदेव रघुवीर जन सूरज नारायण सिंह सुभागा और प्रेमानंद भूतों आदि जिस तरह से सूरीनाम में कवियों का प्रभाव बढ़ता गया वैसे हिंदी शंखनाद में आने लगी।

सुरीनाम साहित्य में मित्र संस्था के तत्वाधान में प्रो. पुष्पिता अवस्थी द्वारा स्थापित पत्रिका 'शब्द शक्ति', 'सूरीनाम हिंदी परिषद', 'सूरीनाम दर्पण' और हिंदीनामा आर्य दिवाकर की धर्म प्रकाश और वैदिक संदेश में बाबू महातम सिंह की शांति दूत प्रमुख थे। आगे चलकर प्रवासी भारतीय लेखिका श्रीमती भावना सक्सेना ने एक कविता का संपादन भी की थी वह कविता है एक बाग का फूल प्रकाशित हुआ जो कि इस पत्रिका का जिक्र बहुत हुई थी इसलिए यह पत्रिका सुरीनाम चर्चित का विषय बन गया उसके बाद पूछता बस्ती ने दो अन्य भाषाओं की रचना की। पहला 'हिंदी में कथा सुरीनाम' और कविता सूरीनाम के शीर्षक से वर्ष 2003 में प्रकाशित हो चुकी थी अर्थात इनकी कई रचनाएं हिंदी साहित्य में आने लगी। चाहे वह कविता के क्षेत्र में कहानी के क्षेत्र में आलोचना के क्षेत्र में निबंध के क्षेत्र में उपन्यास के क्षेत्र में या अनुवादक के क्षेत्र में क्यों ना हो यह सभी विधाएं निरंतर आने लगी इनकी रचनाएं निम्न है।

"कविताएं शब्द बनकर रहती है ऋतुएं (1997) अक्षत (2002) ईश्वराशीष (2005) हृदय की हथेली (2007)रस गगन गुफा में अझर झरे (2007) शब्दों में रहती है वह (2014) भोजपत्र (2015) गर्भ की उतरन (2016).

प्रो. पुष्पिता अवस्थी के उपन्यास चिन्ह मूल्य में वर्तमान स्वरूप:-

सूरीनाम बहुत पुराना देश है। लेकिन आधुनिक दौर में सुरीनाम का नाम कई जनजातियों के नाम से जाना जाता है। जैसे सूरीनाम और व्यवहारिक और व्यवहारिक बोलचाल की भाषा में सूरीनाम पड़ गया था आइए देखते हैं कि अन्य नाम किस नाम से जाना जाता है जैसे शरणाम इतरा नांग सूरीनाम और सूरिनाम आदि छिन्न मूल का मुख्य विषय सूरिनाम है। इस उपन्यास के माध्यम से कहती है कि " गरीब हिंदुस्तान ने श्री राम के इतिहास में 26 फरवरी 1873 लाला रुक जहाज से कोलकाता बंदरगाह से मजदूर के रुप में कदम रखा और 5 जून 1873 को सुरीनाम पहुंचा।"51

यहां पर कितनी बड़ी बात यह है कि जब प्रवासी भारतीय लेखकों ने सुरीनाम में गए। उन्हें अंग्रेजों द्वारा प्रताड़ित व शोषण किया जाता था। इसके बावजूद हिंदी को राष्ट्र हित के लिए काम करने गए तो प्रवासी भारतीयों को भगाया गया और वह बाग बगीचों और जंगलों में जाकर मेहनत मजदूरी करके अपना भरण-पोषण किए अंत में सुरीनाम में हिंदी को तर्पण किया भले ही भारतीय मजदूरों ने कितना भी अंग्रेजों द्वारा सताया गया लेकिन वह वही डटे या लगे रहे अंत में वह नायिका सूरीनाम देश को देखकर सोचती है और कहती है कि "सूरीनाम की धरती ने कई प्रजातियों की गुलामी का दर्द और उनकी आजादी का उल्लास देखा है ललिता को बहुत गहराई से उस समय बहुत अनुभव हुआ था कि मानव मुक्ति के हर आनंद उत्सव के पसीने से यह धरती कितनी बार भीग चुकी है इस धरती का सौभाग्य है कि विश्व के सुंदर देशों से मेहनत कश पुर के यहां आए और मजदूरी की इस जमीन पर अपना घर बनाया। फिर इस देश को ही अपना घर बना लिया। आज यह विश्व के अनेक संस्कृति साली देशों के नागरिकों की नई पीढ़ी की मातृभूमि बनी हुई है।"52

सुरीनाम का प्राकृतिक सौंदर्य:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में सूरीनाम एक ऐसा देश है। जहां पर प्राकृतिक सौंदर्य है। वहां पर पेड़-पौधे और फूलों का बागवानी से भरी हुई है। वहां की सबसे बड़ी खासियत यह है कि सुरीनाम को मन से सूर्य से संबंधित कुछ ऐसे विचार निकलते हैं। जहां भारतीय मूल के लोगों ने 14.260 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण अमेरिका के उत्तरी

छोर पर भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणों का आनंद लेते हैं। इसलिए ऐसे देश को सूर्य के सूर्य और देवों के देव के नाम से जाना जाता है। अब इसी व्यवस्था को देखते हुए हमें यह देखना है कि प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने किस तरह अपनी लिखित विधाओं से प्रकृति के साथ कैसे जोड़ते हैं इसे जानना बहुत जरूरी है। जरूरी इसलिए है कि जहां पर सूर्य देवता के नाम पर कविता से जोड़ना यह सबसे बड़ी उपलब्धि है प्रवासी रचनाकारों के लिए जो बताते हैं कि सुरीनाम का जंगल रेनफॉरेस्ट नदियां जो कि प्रसिद्ध है चीनी मूल उपन्यास में कैरेबियाई देशों में होने वाला केरी फेस्टा मूलतः आयोजन किया जाता था अर्थात कैरेबियाई एक देश है इस बार सूरीनाम में मनाया गया। अंत में महिला पात्र पत्रकार से अपनी हैसियत से पूछती है कि" यूरोपीय और अमेरिकी संस्कृति के दबाव के बावजूद कैरेबियाई देशों के मजदूर वंशजों के आधुनिक नागरिक आज भी प्राकृतिक आधारित आद्य यंत्रों पर पारंपरिक लोग दोनों को लोकगीतों का आधार दिए हुए थे। प्रकृति इन्हें जी रही है और यह प्रकृति को जी रहे हैं अभी इन लोगों ने धरती को भोगना नहीं शुरु किया है इसलिए यहां की प्रकृति ने अपना कुंवारा पन नहीं छोड़ा है जो सम्मोहित करता है।"53

यही कारण है कि सुरीनाम एक अलग सी अपनी पहचान है। वहां पर विशेषकर लड़कियां जंगलों में पाई जाती है। जब बारिश होती है तो अपने आप को कठोर बनाती है। अर्थात लकड़ी लोहा और पत्थर के सहारे अपना घर भी बना लेती है वर्तमान की प्राकृतिक सौंदर्य सुंदरियों में जीती है और हर एक कार्य को बड़े गंभीरतापूर्वक कर लेती है। हम समझते हैं कि घर तो मिल नहीं जाते लेकिन खंडहर मिल जाए। अर्थात इन लड़कियों का संघर्ष प्रकृति के सुंदरता से आंका जा सकता है। वह प्रकृति सौंदर्य की नारी है।

"कभी-कभी लगता है कि यहां की लकड़िया, लोहे और पत्थर से अधिक मजबूत है क्यों न इनमें जंग लगती है और न पानी इन्हें सड़ा गला पाता है। "54

सुरीनाम की भाषा और संस्कृति:-

सुरीनाम की भाषा और संस्कृति का जिक्र किया जाए। वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति तथा सूरीनाम की संस्कृति अर्थात यह दोनों में टकराव तो है। लेकिन कहीं न

कहीं या संस्कृति भारतीय संस्कृति से जुड़ती है। आज प्राचीन सभ्यताओं में भारत की सभ्यता प्राचीनतम है। क्योंकि प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने जिस तरह भाषा को लेकर वह संस्कृति को लेकर जिक्र किए व यम नियम आसन के आधार पर अपनी अस्मिता को संकल्प के साथ कायम रखा है। इसलिए वह प्रवासी भारतीय जो संस्कृति को जनजीवन के स्वरूप को नए-नए परंपराओं से जोड़ चुके हैं। ऐसा कहा गया है कि जहां पर भाषा का निर्माण होता है वहां पर संस्कृति अपने आप में आने लगती है।फिर भी सुरीनाम एक देश है। जिन्हें प्रवासी भारतीय लेखकों ने अपनी मातृभाषा को जीवित रखा है। अर्थात सूरीनाम सूरीनाम इ हिंदी जैसी मातृभाषा के नाम से जानते हैं। डॉ. पुष्पिता अवस्थी के द्वारा रचित उपन्यास में भाषा का एक नया दर्शन रोहित की मां ललिता को सुनाती है और कहती है कि" सुन बच्ची! अइसन पुण्य का फल कउनन को न मिले भगवान से अब हम यही विनती करत बाट........ देख सुबह 4 बजे खईका पकाई के दूध पियत बच्चन के दूध पिया के बाकी सबके खवा के धान लगावे खातिर खेत जाट रहली....... ऐसे जरा सी देर होत रह तो एके बप्पा भूल खड़ा करके जोर-जोर से हल्ला करत रहा चलो धान लगाओ...खाईके ना मिली।"55

इसमें भोजपुरी भाषा का प्रभाव साफ साफ प्रतीत हो रहा है। यह स्त्री पात्र किस तरह ग्रामीण अंचल पर रह कर भोजपुरी भाषा संबोधित करती है। भोजपुरी भाषा का प्रभाव जो सुरीनाम में देखने को मिलता है। वह अद्भुत है वह कहती है कि चाहे हम जहां भी रहे। लेकिन यह भाषा की टकराव के साथ एकता पनप ही जाती है। तब संस्कृति भी मिल जाती है। यह प्रभाव डॉ. पुष्पिता अवस्थी के उपन्यासों में जो वर्णित कर चुकी है। अर्थात सबसे बड़ी बात यह है कि सुरीनाम की भाषा डच मानी जाती है। जो उनकी राजभाषा है और डच भाषा को रोमन लिपि में लिखा जाता है। सुरीनाम की संस्कृति और भारतीय संस्कृति जो कि दूर होते हुए भी बहुत करीब है समय तो बीत जाता है लेकिन कोई भी अपनी पीढ़ी और संस्कृति को नहीं भूलते हैं। चाहे वह भारत का हो या देश विदेश का क्यों न हों? अर्थात अपनी भारतीय संस्कृति और भाषा होती है। जो एक दूसरे से अलग होते हुए भी एक दूसरे के पूरक मानी जाती है।

प्रवासी साहित्यकारों का सामान्य परिचय:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों के सम्मान में परिचय देने में लेखकों एवं लेखिकाओं के नाम मिलते है। वह भारतीय साहित्यकार जो अपनी भूमिका को छोड़कर विदेश की और गमन करना यात्रा करना प्रदेश में जाकर बसना ही प्रवासी साहित्यकारों की उपलब्धि रही है चाहे वह प्रवासी लेखक एवं लेखिका क्यों न हो अर्थात सभी साहित्यकार विदेश में जाकर हिंदी लेखन के कार्यों में काम कर रहे हैं। जिस समय प्रवासी हिंदी साहित्य का पुनरावलोकन किया जा रहा था। प्रवासी भारतवंशी ने हिंदी लेखन की शुरुआत 1913 ईस्वी के आसपास निर्धारित की गई थी। इसलिए इस क्षेत्र को देखते हुए छठवें सातवें दशक हिंदी लेखन के कार्यों में किया गया था। यही कारण है कि प्रवासी हिंदी साहित्य का इतिहास बहुत लंबा रहा है कि इसका कल्पना करना मुश्किल हो जाता था इसके बावजूद भी उत्तर भारत के परिवार की स्थिति दिखाई पड़ती है जैसे-जैसे प्रवासी साहित्यकारों का विकास होता गया वैसे वैसे हिंदी लेखन के क्षेत्रों में एक नया रूप लेने लगी और अंत में आकर विदेश में हिंदी के क्षेत्र में एक नींव स्थापित की आज प्रवासी साहित्यकारों ने बहुत बड़ा श्रेय है। इन्हीं के कर कमलों के माध्यम से हिंदी का नया जन्म हुआ है। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों व अन्य भारतीय मूल निवासियों को गर्व होना चाहिए कि वह किन किन परिस्थितियों से विदेश में जाकर अपनी संस्कृति को बचाए रखे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय लेखक एवं लेखिकाओ के नाम इस प्रकार है।

श्री.रामदेव धुरंधर, अभिमन्यु अनत, वीरसेन जागा सिंह, सुरेंद्र चंद्र शुक्ला, शरद आलोक, मोहर राणा, नरेश भारतीय, तेजेंद्र शर्मा, कृष्ण बिहारी, गौतम सचदेव, कृष्ण बिहारी, डॉ. पद्मेश गुप्त और महिला प्रवासी हिंदी लेखिकाओं के नाम में चतुर्वेदी सुधा, ओम ढींगरा, स्नेह ठाकुर, शशि पाधा, रेखा राजवंशी, भावना सक्सेना, पूर्णिमा वर्मन, दिव्या माथुर, कादंबरी मेहरा, उषा राजे सक्सेना, इला प्रसाद, अनिल प्रभा कुमार और अर्चना पैन्यूली आदि।

रामदेव धुरंधर:-

प्रवासी हिंदी साहित्यकार श्री. रामदेव धुरंधर जी का जन्म 11 जून 1946 ईस्वी को कारोलिन मारीशस में हुआ था। मॉरीशस एक छोटा देश है। जिसे टापू के नाम से जाना

जाता है। यह 27 साल की अवस्था में ही हिंदी लेखन कार्य करने लगे। यहां तक कि वे मॉरीशस में रहकर महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी के क्षेत्र में दृढ़ संकल्प के साथ रहे और कई विधाओं पर कार्य भी कर चुके हैं।

कार्यक्षेत्र:-

जिस समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान के अलावा लगभग 5 से अधिक संस्थाएं खोली थी। ताकि इस संस्था में हिंदी को समृद्धशाली बनाने के लिए काम किया। श्री रामदेव धुरंधर जी महात्मा गांधी संस्थान के मॉरीशस के प्रकाशन विभाग में कई वर्षों तक काम करने के बाद वह अवकाश लेने के बाद लेखन के क्षेत्र में उतर पड़े। सन1970 से लेकर आज तक कहानी उपन्यास नाटक कविता आदि लेखन का कार्य कर रहे हैं।

रामदेव धुरंधर का सम्मान:-

*हिंदी भाषा उन्नयन सम्मान:- सरोज संघ मॉरीशस द्वारा।

*दुष्यंत कुमार स्मारक सम्मान:- दुष्यंत कुमार संग्रहालय भोपाल द्वारा।

*विश्व हिंदी रत्न, आधारशिला विश्व हिंदी मिशन, नैनीताल द्वारा।

*हजारी प्रसाद द्विवेदी सम्मान।

अभिमन्यु अनत:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में अभिमन्यु अनत का नाम सर्वोपरि है। मॉरीशस के जाने-माने प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं। इनका जन्म 9 अगस्त 1937 ईस्वी को क्रियोल मॉरीशस में साथी प्राप्त हुआ। यह साहित्यिक गतिविधियों को नई लेखन के सहयोग से अपनी लेखनी को मजबूत प्रदान किया है अधिकतर इनकी रचना शैली पर देखा जाए तो भारत से लेकर मॉरीशस तक नए-नए पाठ्यक्रमों को सामान्य स्तर से समायोजित किए हैं।

कार्य क्षेत्र की दृष्टि से:-

अभिमन्यु अनत मॉरीशस में लेखन का कार्य बड़ी सरलता पूर्वक करते थे। इस प्रकार देखा जाए तो 2004 में महात्मा गांधी संस्थान व प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किए और हिंदी सेवा मुक्त होने के बाद बसंत पत्रिका का संपादन भी किया तथा इस पत्रिका का संपादन में भी रह चुके हैं। अर्थात इसी संस्था से बाल पत्रिका, रिमझिम पत्रिका के संपादन में लगातार कार्य करते रहें।

सम्मान की दृष्टि से:- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा सम्मानित।

हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा सम्मानित।

के.के बिरला फाउंडेशन नई दिल्ली के साथ-साथ अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित।

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, हिंदी सेवा के लिए जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार।

वीरसेन जागा सिंह:-

प्रवासी हिंदी साहित्यकार वीरसेन जागा सिंह का जन्म 20 मार्च 1946 ईस्वी में मॉरीशस में हुआ था। यह हिंदी शिक्षण और शिक्षा को लेकर काफी सक्रिय रहे तथा उच्चतर की डिग्री भी प्राप्त की थी तथा इनके योग्यता से परिचय मिलता है। एम. ए. पीएचडी के साथ पी.जी सी.आई की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं इसलिए मॉरीशस में रहकर हिंदी लेखन की गतिविधियों को आगे बढ़ाएं हैं। कार्य क्षेत्र की दृष्टि से कहा जाता है कि वीरसेन सिंह जागा सिंह ने अपने समय काल के अनुसूची में अनुशीलन में तीन ऐसी संस्था है। जहां इस पद पर कार्यरत है जैसे उन संस्थाओं का नाम इस प्रकार है। महात्मा गांधी संस्थान मौका और मॉरीशस में हिंदी व्याख्याता के क्षेत्र में रह चुके हैं विश्व साहित्य की कई विधाओं पर रुचि रखते थे। इसलिए वीर सेन सिंह जागा सिंह को भारत से लेकर मॉरीशस तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन करते थे जो आज उनकी कई रचनाओं में मिलती है। सम्मान की दृष्टि से कई सम्मान प्राप्त हो चुके।

सुरेशचंद्र शुक्ल शरद 'आलोक':-

सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक जी का जन्म 10 फरवरी 1954 को लखनऊ उत्तर प्रदेश में हुआ प्रारंभिक शिक्षा की दृष्टि से देखा जाए। गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी इंटर कॉलेज डीएवी कॉलेज तथा श्री नारायण डिग्री कॉलेज में सक्रियता पूर्व अपनी शिक्षा को ग्रहण करते रहे और आगे चलकर ओस्लो विश्वविद्यालय नार्वे पत्रकारिता के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे लेखन के क्षेत्र में उतर गए तथा वे उस दौर में पहले व्यक्ति थे जो नार्वे में रहकर शिक्षा के क्षेत्र में जुड़े थे। इस इसी विश्वविद्यालय में नार्वे जीवन और स्कैंडिनेवियाई साहित्य का अध्ययन किया।

कार्य क्षेत्र की दृष्टि से:-

सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक जी कार्य के क्षेत्र बड़े स्तर पर रहा है तथा विविध भारती होने के कारण नार्वे जीवन सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम और नार्वे के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वे नार्वे में रहकर दो ऐसे विश्वविद्यालय जहां पर अध्ययन एवं अध्यापन के क्षेत्र में निरंतर करते रहे हैं उस संस्था का नाम पूछ लो विश्वविद्यालय और कोपेन्हेगन विश्वविद्यालय में अतिथि शिक्षक के रूप में कार्य करते रहे तथा उन्होंने कई वर्षों से 'फायर पत्रिका' के संपादक भी रहे। सबसे बड़ी बात यह है कि लखनऊ विश्वविद्यालय के अंतर्गत उत्तर प्रदेश हिंदी भाषा संस्थान में तीन दिवसीय सेमिनार का आयोजन 22, 23 और 24 फरवरी को हुआ था तथा इस 'फाइर पत्रिका' का विमोचन भी हुआ।

सम्मान की दृष्टि से:- भारत, डेनमार्क, नार्वे, यू.के यूएसए आदि देशों से 45 पुरस्कार से नवाजा गया।

मोहन राणा:- मोहन राणा जी का जन्म 9 मार्च 1946 में हुआ। यह दिल्ली जैसी राजधानी, दिल्ली विश्वविद्यालय से मानविकी में इस्नाकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। वे इंग्लैंड में बात नामक शहर के निवासी है। यह साहित्यिक गतिविधियों को हिंदी लेखन के क्षेत्र में काम कर चुके हैं। कार्यक्षेत्र स्वतंत्र लेखन है।

नरेश भारतीय:- नरेश भारती जी का जन्म 21 मई 1940 को फिरोजपुर पंजाब में हुआ था। अगर पारिवारिक दृष्टि से देखा जाए। इनका नाम नरेश अरोड़ा है इन्होंने अपनी

शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय और यूनिवर्सिटी आफ वेस्टमिंस्टर लंदन में ग्रहण की थी।

कार्य क्षेत्र की दृष्टि से:- नरेश भारती जी ने लंदन से हिंदी अंग्रेजी टीवी भाषी पत्रिका का संपादन भी करते थे। उस पत्रिका का नाम है। चेतक जो हिंदुस्तान समाचार समिति द्वारा तथा लंदन के पूर्व संवाददाता भी रह चुके हैं उन्होंने विदेश में जाकर सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से लेखन को भारत के कई पत्र-पत्रिकाओं में शामिल किया इसलिए में 1964 ईस्वी में विदेश में जाने के बाद विभिन्न पत्र पत्रिकाएं पत्रिकाओं में हिंदी के क्षेत्र में काम किए तथा लंदन में रहकर पत्रकारिता के क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

सम्मान की दृष्टि से:- 2002 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम से विश्व हिंदी सम्मान एवं अंतरराष्ट्रीय जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार।

* 2002 में परमानंद साहित्य सम्मान।

* 2003 में हिंदी सेवी सम्मान।

* 2010 में प्रवासी शिखर सम्मान।

जोगिंदर सिंह कमल जोगेंद्र सिंह कमल जी जन्म के काल बिंदु से भी अभी तक पता नहीं चल पाया। क्योंकि मैं पंजाब से भारत से संबंध रखने वाले हैं इसलिए इनके बारे में अभी तक कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई है।

कार्य के क्षेत्र में :- 1981 में प्रवासी भारतीय परिषद द्वारा प्रवासी भारतीय अवार्ड उत्तर प्रदेश से सम्मानित किया गया

महेंद्र देवसर दीपक:- महेंद्र देवसर दीपक का जन्म 14 दिसंबर 1929 को दिल्ली में हुआ तथा पंजाब विश्वविद्यालय से प्रभाकर और 1950 के अंतराल में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की 2 वर्ष बाद 1952 ईस्वी में पंजाब यूनिवर्सिटी कैंप कॉलेज नई दिल्ली से एम.ए. अर्थशास्त्र में शिक्षा प्राप्त की।

कार्य के क्षेत्र में:- महेंद्र देवसर दीपक जी ने जिस समय एम.ए. की शिक्षा उत्तीर्ण की। उस समय भारतीय विदेश के मंत्रालय की विदेश में जाने का निर्णय के साथ चयन

किया गया था।इसलिए विदेश में हिंदी सेवा के लिए कार्य कर चुके थे इसके बाद जांच करता इंडोनेशिया में भारतीय दूतावास में चयन भी किया गया था पुनः उसके बाद 1956 ईस्वी में भारत की ओर वापसी हुआ अंत में 1971 में भारतीय हाई कमीशन लंदन जैसे देश में नियुक्ति भी की मिली नियुक्ति मिली।

तेजेंद्र शर्मा:- प्रवासी हिंदी साहित्य में जाने-माने प्रसिद्ध कथाकार तेलीन शर्मा जी का जन्म 21 अक्टूबर 1952 जगरावा पंजाब में हुआ था और अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. अंग्रेजी में प्राप्त की कार्यक्षेत्र तेजेन्द्र शर्मा की शांति धारावाहिक आलेखन किया। इन्होंने नाना पाटेकर के साथ अभिनय किया तथा अन्नू कपूर निर्देशित फिल्म अभय था इसलिए आज वे लंदन में रह रहे हैं। यह हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सम्मान इंदु शर्मा कथा सम्मान और कथा यूके सचिव भी है तथा वर्तमान दौर में लंदन में ओवरग्राउंड रेलवे के कार्यरत है।

सम्मान की दृष्टि से:-

* सुपथगा का सम्मान 1987.

* ढिबरी टाइट के लिए महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार 1965.

* सहयोग फाउंडेशन का युवा साहित्यकार पुरस्कार 1998.

* कथा यूके के द्वारा बेघर आंखें को सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार 2002.

* प्रथम संकल्प साहित्य सम्मान दिल्ली 2007.

* तितली बाल पत्रिका का साहित्य सम्मान बरेली 2007.

* भारतीय उच्चायोग द्वारा डॉ हरिवंश राय बच्चन सम्मान 2008.

कृष्ण बिहारी:- कृष्ण बिहारी जी का जन्म 29 अगस्त 1954 पूर्वी क्षेत्र उत्तर भारत गोरखपुर नामक जिले में हुआ था। इनके गांव का नाम बांसगांव तहसील खजनी में हुआ था। पुनः कुछ वर्षों बाद कानपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की। 1968 से 1969 हिंदी लेखन का कार्य करते रहे इस समय अभी आबू धाबी में अपना

स्थान बना चुके हैं।

कार्य क्षेत्र की दृष्टि से:- कृष्ण बिहारी जी अखबार और रेडियो की दुनिया में काम करते हैं। आबू धाबी में 20 वर्षों से हिंदी शिक्षण में वरिष्ठ अध्यापक के रूप में संलग्न है। पिछले कुछ दिनों से कल के लिए एक पत्रिका निकालते थे जो कि बहराइच के उत्तर प्रदेश से निकलती थी तथा 9 वर्षों से इस पत्रिका में काम करते रहे।

गौतम सचदेव:- गौतम सचदेव जी का जन्म मति बार बर्तन जिला शेखपुरा में हुआ था। यह जिला पंजाब के उस भाग में है। जहां पंजाब का वह भाग जो पाकिस्तान में दिखाई पड़ती है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालयों में एम.ए. हिंदी के बाद पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

कार्यक्षेत्र:- गौतम सचदेव ने बीबीसी लंदन लगभग दो दशकों से निरंतर काम कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि वह हिंदी के क्षेत्र में कितने सक्रिय व सरलता पूर्वक काम करते थे। 21 वर्षों बाद शोध निर्देशक के क्षेत्र में काम किए हैं तथा उस विश्वविद्यालय का नाम है। दिल्ली विश्वविद्यालय आज की दृष्टि से देखा जाए तो कैंब्रिज विश्वविद्यालय हिंदी साहित्य की गतिविधियों में हिंदी शिक्षण को कर्मठता पूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं।

सम्मान की दृष्टि से:-

* गीतो भरे खिलौने बाल गीत संग्रह पर राष्ट्रीय पुरस्कार

* तितली कहानी पर हरियाणा हिंदी अकादमी द्वारा अखिल भारतीय पुरस्कार

* 'हमेशा पूछिए' नामक रेडियो कार्यक्रमों की वर्षों तक उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए बीबीसी हिंदी सेवा का विशेष पुरस्कार

* यू.के.हिंदी समिति द्वारा हिंदी सेवा सम्मान डॉ लक्ष्मी मल सिंघवी अंतर्राष्ट्रीय कविता सम्मान

* यू.के. के. अकेले और पहले हिंदी लेखक जिनके सम्मान में भारत में अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित हुआ।

प्रवासी हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का नाम:- महिला रचनाकारों में सुषम बेदी, सुधा ओम ढींगरा, स्नेह ठाकुर, रेखा राजवंशी, शशि पाधा, भावना सक्सेना, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, पूर्णिमा वर्मन, उषा वर्मा, कादंबरी मेहरा, इला प्रसाद, उषा राजे सक्सेना, अनिल प्रभा कुमार और अर्चना पैन्यूली आदि प्रवासी हिंदी लेखिकाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार प्रस्तुत है।

प्रवासी साहित्य का मूल उद्देश्य:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का मूल उद्देश्य है कि प्रत्येक भारतीय प्रत्येक प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने हिंदी के क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए विदेश की धरती पर अपना स्थान बनाया और हिंदी लेखन का कार्य को इस प्रकार स्थापित किया। ताकि वे लोग हिंदी को बोल सके और हिंदी में लिख सके। प्रवासी साहित्यकारों के लिए सबसे बड़ा उद्देश्य था और यह उद्देश्य सिर्फ भारत तक सीमित नहीं बल्कि विदेशों में हिंदी की नींव को स्थापित करना यह हम सभी को गर्व होना चाहिए कि प्रत्येक प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने अपनी संस्कृति व सभ्यता को बचाने के लिए विदेश में प्रत्येक लोगों को विधाओं के द्वारा ज्ञानार्जन किया जाय। और हम समझ सकते हैं कि विदेश में 169 विश्वविद्यालयों में हिंदी में शिक्षण का कार्य किया जा रहा है तथा उन्हें अलग से हिंदी के लिए क्लास चलती है। आज 21वीं सदी के दौर में विदेशों में हिंदी के लिए विजय की पताका बन चुकी है इसलिए प्रवासी साहित्यकार का सबसे बड़ा उद्देश्य था लोग हिंदी को सीखे पढ़ने और हिंदी में पढ़ने के बात वाद-विवाद और संवाद हो सके। यह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि रही है। आज दिखाई दे रही है प्रवासी साहित्य तारों का मूल उद्देश्य निम्नलिखित है।

* युवा पीढ़ी को अप्रवासी से जोड़ना

* विदेशों में रह रहे भारतीय श्रमजीवियों की कठिनाई जानना और उन्हें दूर करने की कोशिश करना

* भारत के प्रति निवासियों को आकर्षित करना।

* विदेशों के अवसर को बढ़ाना।

मॉरीशस के साहित्यकारों का परिचय और योगदान:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरीशस के साहित्यकारों का परिचय व योगदान अनियमित रूप में दी जाती है जो इस प्रकार है। पंडित वासुदेव विष्णु दयाल सोमदत्त बाखोरी बृजेंद्र कुमार भगत मधुकर अभिमन्यु अनत राजेंद्र वरुण मुनीश्वर लाल चिंतामणि प्रहलाद रामशरण ठाकुर दत्त पांडे हरिनारायण सीता राम देव धुरंधर आदि ऐसे मॉरीशस के साहित्यकार है जो हिंदी के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहे हैं।

श्री.रामदेव धुरंधर:-

प्रवासी हिंदी साहित्य का रामदेव धुरंधर एक लेखक व कथाकार है। अपने लेखन से मॉरीशस में हिंदी को स्थापित किए हैं और वहां कई ऐसी संस्थाएं भी खोली गई थी कि जो छोटे बड़े बच्चे हिंदी को सीखते हैं पढ़ते हैं रामदेव धुरंधर जी का जन्म 11 जून 1946 को कारोलिन नामक गांव में हुआ यह 27 साल की अवस्था में हिंदी लेखन के कार्यों में जुट गए। यहां तक कि उन्हें लघु उपन्यासकार के नाम से जाना जाता है। इनका लेखन का कार्य 1971 से आज तक हिंदी में काम किए यहां तक कि वह कई विधाओं को लिख चुके हैं। चाहे वह कहानी उपन्यास नाटक और कविता क्यों न हो? यह सभी विधाओं को हिंदी के रूप में समय के लिए है वह प्रवासी साहित्यकार रामदेव धुरंधर है।

अभिमन्यु अनत:-

प्रवासी हिंदी साहित्य में अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1947 को क्रियोल मॉरीशस में हुआ था। यह भी रामदेव धुरंधर के रचनाओं से कम नहीं लिखे हैं। यहां तक समझिए कि यह दोनों एक साथ मिलकर हिंदी को आगे बढ़ाने का निरंतर प्रयत्न कर चुके हैं। फिर भी हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि अभिमन्यु अनत जी का एक रचना 'लाल पसीना' जो प्रवासी हिंदी जगत में सुविख्यात है। आज भी मॉरीशस में गिरमिटिया मजदूरों से लेकर छोटे बड़े बच्चे भी हिंदी में बोलते और समझते हैं। 2004 में महात्मा गांधी संस्थान में अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वहां पर पत्रिका निकलती थी। बसंत पत्रिका इसके संपादक अभिमन्यु अनत है बाद में आगे चलकर रिमझिम पत्रिका नामक

पत्रिका का संपादन भी किया था तथा वे साहित्यिक दृष्टि कई सम्मानों से नवाजा गया है और उन्हें पुरस्कृत भी किया गया है। यही कारण है कि अभिमन्यु अनत एक ऐसे उपन्यासकार है जो खुद मॉरीशस में रहकर हिंदी की उत्कृष्ट संपदा स्थापित किए है। चाहे कहानी उपन्यास कविता आदि विधाओं विधाएं विधाओं का निर्माण क्यों न हो? बल्कि हिंदी को सरलता पूर्वक कार्य किए है।

राजहीरामन:-

प्रवासी हिंदी साहित्य ने राज हीरामन जी का जन्म 11 जनवरी 1953 ईस्वी मॉरीशस के उत्तर प्रांत में क्रियोल नामक गांव में हुआ था जन्म के ढाई साल बाद पिताजी के मृत्यु हो गया और मां एक साधारण परिवार में रहती थी। इसके बावजूद पति के मृत्यु होने के बाद मजदूरी करके अपने प्रति पेट के पालन पोषण करती थी। उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण किसी तरह से शिक्षा को ग्रहण किया और परिवार की दृष्टि से राज हीरामन 10 बच्चों में से सबसे छोटे थे। इन दिनों परिवार में स्थिति बिगड़ती गई। यहां तक अपनी प्राथमिक शिक्षा मजदूरी के साथ लगातार करते रहे उसके बाद कई वर्षों तक लगातार संघर्ष करने के बाद पुलिस कांस्टेबल बने। लगभग दो साल बाद पुलिस की सर्विस करते रहे उनके मन में कुछ इस प्रकार के विचार जगने लगे। कि अगर मैं अध्यापिका क्षेत्र में आ जाएंगे तो एक राष्ट्र निर्माता के रूप में कार्य करेंगे। क्योंकि राजूराम जी ने पारिवारिक स्थितियों और परिस्थितियों को बहुत अच्छे से जानते थे कि इसी तरह से पिता की मृत्यु के बाद माताजी ने किन-किन या तनाव एवं मेहनत मजदूरी करके परवरिश की थीं और जनता नामक साप्ताहिक समाचार पत्र सीखा तत्व 1976 ईस्वी में 'टाइम्स ऑफ इंडिया मुंबई'में पत्रकारिता सीखने के लिए चले गए और इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी जैसी भाषा को सीखने एवम सिखाने का बहुत बड़ा योगदान रामदेव धुरंधर का रहा है। इस विषय पर कहना जरा सा संकोच नहीं है कि फिर भी राजूराम जी ने 22 सालों तक रेडियो टेलीविजन में कार्यरत थे इन सभी पद से आगे आते हुए 1988 में स्कूल को छोड़कर महात्मा गांधी संस्थान में सृजनात्मक रूप से लेखन के क्षेत्र में लगे रहे अंत में राजारामजी मॉरीशस के सुप्रसिद्ध लेखक कथाकार के रूप में माने जाते हैं। यहां तक

कि आज उनकी कई ऐसी साहित्य की विधाएं विश्व भर में स्थापित हो चुकी है। और हिंदी लेखन का कार्य हिंदी विभाग में निरंतर करते रहे हैं तथा माध्यमिक स्तर पर काम किया जा रहा है अंत में राजूराम जी ने महात्मा गांधी संस्थान से 2 पत्रिका निकाली थी वह पत्रिका का नाम है बसंत और रिमझिम के वरिष्ठ संपादक रह चुके हैं वहीं उल्लेखनीय कार्य को देखा जाए तो 'धरती तले'(कविता संग्रह), 'कथा संवाद '(लघु कथा संग्रह) काव्य संग्रह प्रवासी साहित्य के रूप में सामने उभरकर आया।

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कह सकते हैं कि प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य की अवधारणा के रूप में रंग रूप और उसकी चेतना और संवेदना के अंतर्गत मिलता है। इस साहित्य में भारतीय प्रवासी लेखक ने हिंदी के क्षेत्र में निरंतर कार्य किया है। आज प्रवासी साहित्य को सिर्फ प्रवासी के नाम से नहीं बल्कि नव विमर्श के नाम से जाना जाता है और प्रवासी साहित्य का अर्थ, अवधारणा और स्वरूप के अंतर्गत परिभाषा को स्पष्ट रूप से समझ पाया हूँ। जो कि नामकरण की दृष्टि से प्रवासी साहित्य का एक बड़े पैमाने पर देखने को मिला है। इसी कड़ी में प्रवासी साहित्य का स्वरूप विदेशों में प्रत्येक भारतीय प्रवासी लेखक हिंदी का विकास स्थापित किया है। जैसे इंग्लैंड का प्रवासी साहित्य, मॉरीशस का प्रवासी साहित्य सूरिनाम का प्रवासी साहित्य और अमेरिका का प्रवासी साहित्य देखने को मिला है। वहा पर हिंदी में अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जा रहा है। इसी के साथ ही साथ प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का परिचय और सम्मान की दृष्टि से प्रस्तुत किया हूँ। प्रवासी हिंदी साहित्य का मूल उद्देश्य को केंद्र के रखकर बया किया हूँ।

संदर्भ सूची:-

1:- मुंशी प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ संख्या 86.

2:- डॉक्टर लक्ष्मी मल्ल सिंधवी, पृष्ठ संख्या 67.

3:- राजेंद्र वरुण

4:- अटल बिहारी बाजपेई

5:- वीरसेन सिंह जागा, संपादक बसंत त्रैमासिक मासिक

6:- अटल बिहारी बाजपेई

7:-अटल बिहारी बाजपेई, सातवां विश्व हिंदी, सम्मेलन सूरीनाम

8:- डॉ महावीर सरल जैन

9:- डॉ कृष्ण कुमार, वर्तमान साहित्य, पृष्ठ संख्या 69.

10:-डॉ.पद्मेश गुप्त, प्रवासी पुत्र, पृष्ठ संख्या 27.

11:- रामचंद्र वर्मा, संपादक लोकभारती, पृष्ठ संख्या 68.

12:- कृष्ण कुमार ,प्रवास एवं प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 13.

13:- डॉ करनैल सिंह, प्रवासी चेतना प्रवास इतिहास, पृष्ठ संख्या 85.

14:-वेद प्रकाश बटुक, प्रवासी हिंदी लेखन अमेरिका के संदर्भ में, पृष्ठ संख्या 61.

15:- डॉ. चंदन, पंजाबी साहित्य दीवा समस्या, पृष्ठ संख्या 9.

16:-श्यामसुंदर दास, हिंदी शब्द सागर चार खंड, पृष्ठ संख्या 249.

17:- रामचंद्र वर्मा, संपादक लोकभारती प्रमाणिक हिंदी कोश इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 546.

18:- कृष्ण कुमार, प्रवास एवं प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 13.

19:-संस्कृत कोश

20:- श्यामसुंदर दास, संपादक हिंदी शब्द सागर खंड चार, पृष्ठ संख्या 249.

21:-भारतीय डायस्पोरा .विविध आयाम

22:-कुछ गाँव कुछ शहर -निनापाल- पृष्ठ संख्या 11.

23:-हिंदी का प्रवासी साहित्य -डॉ. कमल किशोर गोयनका .पृ.50.

24:-हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी लेखन .उषा राजे सक्सेना -पृ.62.

25:-हिंदी का प्रवासी साहित्य .डॉ. कमल किशोर गोयनका .पृ.47.

26:-संस्कृत कोश

27:-भगवानदास कहार, हिंदी प्रवासी कथा साहित्य, पृष्ठ संख्या 55.

28:- कमल किशोर गोयनका, प्रवासी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ संख्या 87.

29:- स्वर्णलता खन्ना, संपादकीय हिंदी के प्रवासी साहित्य की परंपरा, पृष्ठ संख्या 60.

30:- गवेषणा पत्रिका अंक 3 केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा पृष्ठ संख्या 47.

31:-कमलेश्वर

32:- डॉ हेमराज सुंदर, दशवें विश्व हिंदी सम्मेलन एक भेंटवार्ता, पृष्ठ संख्या 50.

33:-डॉ. उदय नारायण गंगू, मॉरीशस में हिंदी की स्थिति, पृष्ठ संख्या 156.

34:-श्री जयनारायण, मॉरीशस में हिंदी भाषा का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ संख्या 155.

35:-बलदेव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ संख्या 33.

36:-कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 102.

37:-कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 173.

38:- लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी, 'रसकुंज काव्य' मारीशसीय हिंदी भाषा और साहित्य, पृष्ठ संख्या 574.

39:- डॉ. मीना कौली, विश्व पटल हिंदी, पृष्ठ संख्या 293.

40:- विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय, पृष्ठ संख्या 192.

41:-डॉ.कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 414.

42:-डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य पृष्ठ संख्या 421-22.

43:-डॉ.कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य पृष्ठ संख्या 421-,22.

44:- डॉ.कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य,पृष्ठ संख्या 421-22.

45:-महाकवि गुलाब खंडेलवाल, कागज की नाव, पृष्ठ संख्या 4.

46:-महाकवि गुलाब खंडेलवाल, जीवन दर्शन, पृष्ठ संख्या 7.

47:- महाकवि गुलाब खंडेलवाल, जीवन दर्शन, पृष्ठ संख्या 43.

48:-वाशिनी शर्मा, विश्व भाषा हिंदी, पृष्ठ संख्या 143.

49:-रमेश दिवाकर, डॉ मीना कौल, विश्व पटल हिंदी, पृष्ठ संख्या 64.

50:-डॉ.कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 490.

51:-कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्यपृष्ठ संख्या 495.

52:-कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 505.

53:-पद्मेश गुप्त प्रवासी पुत्र पृष्ठ संख्या 45.

54:-डॉ कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ संख्या 506.

55:-स्मारिका, विश्व हिंदी सम्मेलन, पृष्ठ संख्या 190.

56:-प्रो. पुष्पिता अवस्थी, छिन्नमूल, धर्म युग पत्रिका पृष्ठ संख्या 34.

57:- प्रो. पुष्पिता अवस्थी, छिन्नमूल, पृष्ठ संख्या 39.

58:- प्रो. पुष्पिता अवस्थी, छिन्नमूल, पृष्ठ संख्या 37.

59:-प्रो. पुष्पिता अवस्थी, छिन्नमूल, पृष्ठ संख्या 128.

60:-प्रो. पुष्पिता अवस्थी, छिन्नमूल, पृष्ठ संख्या 164.